१ प्रस्तावना

ईश्वर ने हम लोगों को मस्तिष्क और बुध्दि दिया है, ताकि हम यह महत्वपूर्ण फैसला करें कि हम सृष्टी की उपासना करें या फिर सृष्टिकर्ता की उपासना करें। यह मानवीय जीवन का एक महत्वपूर्ण निर्णय है। इसी पर मानव का भविष्य निर्भर है। संक्षेप में यह है कि हम में से हर इन्सान को बिना उत्तेजना के, प्रस्तुत किये गये सुबूत में विचार करना चाहिए। और सही अनुभव होने वाली राह अपनानी चाहिए जब तक कि कोई और सुबूत सामने न आए।

आदि से अनंत तक सृष्टिकर्ता एक ही है। इसके अन्दर कोई बदलाव नहीं हुआ है। यह पुस्तक इस दावा के सही होने के कुछ प्रमाण प्रस्तुत करती है। यद्यपि यह बात हमारे मस्तिष्क में होनी चाहिए कोई भी भावनाओं और कट्टर्टता से अलग होकर सत्य मार्ग का निर्णय कर सकता है। साधारणतया हमें वास्तविकता से यही चीज़ें अन्धा कर देती है। केवल उस बुध्दि का सही प्रयोग करके जो हमें ईश्वर ने दी हैं इसका सही फैसला कर सकते हैं।

२ सभी के लिए उपयोगी संदेश

प्रिय बंधुओ, क्या आपने एक क्षण के लिए भी सोचा है की सम्पूर्ण संसार में तीव्र गती से भौतिकवाद की उन्नति हो रही है, हर वस्तु में नयापन आ रहा है कम्प्यूटर ने हर वस्तु को अपने अन्दर शामिल कर लिया है। भूमि पर खड़ा मानव चन्द्रमाँ पर अपनी दृष्टि जमाए रखता था अब वह उस पर अपना चरण भी रख चुका है। इसने बहुत सफलता प्राप्त की परन्तु अधिकाधिक लाचार होता जा रहा है। मानव, मानव का शत्रु हो चुका है। हर तरह के जानवरों वाला कार्य कर रहा है। हर प्रकार की सामाजिक बुराई का शिकार हो रहा है। इसका परिणाम यह है की समाज में बुराई फैल रही है। एक ऐसी परिस्थिति पैदा कर दी गई है जिसमें नैतिकता, व्यवहार, पुण्य और पाप आदि का कोई महत्व नहीं है।

कुछ ठहरिए, आप आसपास की वस्तुओं में घोर विचार कीजिए। अपने चारों ओर वातावरण को ध्यान से देखिए। सूर्य, चन्द्रमा, सितारे, आकाश, ग्रह वृक्ष पहाड़ इत्यादि सब के सब ईश्वर की आज्ञा को पालन करते हैं। इस प्रकिया में कोई भी मन माना काम नहीं करता है। क्यों कि वे सृष्टिकर्ता के इच्छा का अनुसरण करते हैं। वे उन प्राकृतिक नियमों का पालन करते हैं, जिसको ईश्वर ने उसके लिए लागू किया है। हम सभी लोगों का सृष्टिकर्ता एक है। वह पानी जो हमारी प्यास को बुझाता है। वह भोजन जो हमारी भूक को मिटाता है, वह हवा जिससे हम साँस लेते हैं और वह रक्त जो हमारे नाड़ियों में बहता है। सब के सब हम सभी लोगों में समान हैं। एक ही सृष्टिकर्ता है जिसने आकाशीय और एक खगौलीय पिण्ड़ बनाई है।

जब हम सभी लोगों का ईश्वर एक ही है, तो प्रश्न उठता है कि लोग ईश्वर के संबंध में क्यों विभिन्न प्रकार की धारणा रखते हैं? क्यों लोग ईश्वर की खोज में इधर उधर दौड़ते फिरते हैं। जबकि वह अपने खास गुणों के साथ हमारे समक्ष स्पष्ठ है। इन प्रश्नों का उत्तर यह है कि मानव अज्ञानी हो चुका है। और वह एक सैध्दान्तिक संसार में भिन्न, भिन्न विचार धाराओं के साथ है।

एक और चीज़————क्या आप जानते हैं कि एक नवजात शिशु क्या करता है जब वह अपने माँ के गर्भ से बाहर निकलता है?

क्या वह रोता है?

क्या वह दूध पीता है?

नहीं, वह साँस लेता है जिसके बग़ैर कोई जीवित ही नहीं रह सकता है। क्या आप जानते हैं? किसने साँस लेने की आज्ञा और उसको शक्ति दी? वह सर्वशक्तिमान ईश्वर के सिवा कोई नहीं है। उसी ईश्वर ने सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड़ की रचना की है। वही है जिसने एक शिशु को जीवन दिया है। वही है जो एक शिशु को श्वास लेने की शक्ति प्रदान करता है, जिसके बग़ैर शिशु जीवित नहीं रह सकता है। क्योंकि श्वास उन महत्वपूर्ण प्रकियाओं में से एक है जिसे हर मानव और हर जन्तू के लिये अनिवार्य। श्वास किया के बग़ैर प्राणी जीवनविहीन हो जाएगा।

बग़ैर जाने हुए तथा बग़ैर अनुभव किए हुए हर मानव हर पल साँस ले रहा है और छोड़ रहा है। ऑक्सीजन के लेने तथा कार्बन ड़ाइऑक्साइड के छोड़ने की प्रकिया न ही हमारे इच्छा से होती है और न ही हमारे आज्ञा से होती है। यह ईश्वर की आज्ञा के अनुसार है। जीवन तथा मृत्यु उसी के हाथ में है।

हमारे हाथ में कुछ नहीं है। सितारों के समूह में से प्रत्येक तथा ब्रह्माण्ड उसी की इच्छा और आज्ञानुसार चलता है।

जब सृष्टिकर्ता ने हमें जीवन प्रदान किया है और हमें जीवित रखने के लिए हर चीज़ दी हैं, फिर हम क्यों उसके कृतज्ञा और आज्ञाकारी नहीं होते हैं? सर्वशक्तिमान के आभारी होने के लिए सर्वप्रथम हमें उसकी सर्वशक्तिमानता और उसकी उच्च और अनंत शक्ति को स्वीकार करने की आवश्यकता है। फिर हमें उसकी उचित और शुद्ध ज्ञान को पहचानने की आवश्यकता है। इसी कारण ई श्वर के संबंध में सही धारणा वही है जिसका वर्णन बहुत सारी धार्मिक और आकाशीय ग्रंथ में है। ईश्वर के संबंध में से कोई उसका साथी नहीं है। सभी आकाशीय ग्रंथ मानव के लिए पृथ्वी की सतह पर अवतरित हुए साफ-साफ इसी बात को कह रहा है। यहाँ तक कि वेदों में वर्णित है।

एकम ब्रह्म द्वतीय नास्ते नेहना नास्ते किंचन।

अर्थ: केवल एक ईश्वर है, दूसरा नहीं है बिल्कुल नहीं है। कदापि नहीं है बिल्कुल है ही नहीं।

इस प्रकार हिन्दुत्व का यह **ब्रह्मसूत्र ईश्वर** के धारणा के संबंध में बिल्कुल सत्यता को साफ-साफ प्रकट करता है। उपरोक्त श्लोक की गवाही उपनिषद से लिया गया निम्नलिखित श्लोक भी देता है।

एकम एवद्वितियम।

अर्थ: वह सिर्फ एक है दूसरा कोई नहीं।

छान्दोग्य उपनिषद् 6:2:1

उपनिषद के दूसरे श्लोक में कहा गया:

न चास्य कश्चिज्जनिता न चधिपः

उसका न कोई पिता है और न ही स्वामी।

(स्वेतास्वत्र उपनिषद् 6:9/ यजुर्वेद् 32:3)

सर्वशक्तिमान ईश्वर के एक होने की गवाही उपनिषद का एक और श्लोक इस प्रकार देता है।

न तस्य प्रतिमः आस्तिः

अर्थः उसकी कोई आकृति (रूप) नहीं।

(स्वेतास्वत्र उपनिषद् 4:19)

बाईबल में भी एक ईश्वराद के कुछ अंश मिलते हैं। बाईबल जबकि अपनी असली हालत में नहीं है।

तुम ज़मीन में किसी को अपना बाप न कहो,
(ईश्वर) तुम्हारा एक ही बाप है, जो परलोक में रहता हैं।

(मताई 23:9)

एक और स्थान पर उल्लेख हैं।

हे मानव, तुम ईश्वर को मानने के लिये कौनस उदाहरण मानोगे और किसके बराबर। (बाईबल ऐशिया 40:18)

एक और उदाहरण बाईबल में मिलता है कि ईश्वर के बारे मे सोचना मनुष्य की कल्पना से परे है, कि ईश्वर का रूप कैसा है, इसका स्वरूप कैसा है।

मनुष्य न ही ईश्वर की आवाज़ सुनी है और न ही उसे देखा है।

(बाईबल युहन्ना 5:37)

ईश्वर द्वारा अवतरित अंतिम ग्रंथ पवित्र क़ुरआन भी सामान्य शब्दों में इस सत्य के अवधारण को प्रकट करता है।

कहो, वह अल्लाह यकता है। अल्लाह निरपेक्ष (और सर्वाधार) है। न वह जनता है और न जन्या गया है। और न कोई उसका समकक्ष है।

(पवित्र क़ुरआन 112 श्लोक 1-4)

इस प्रकार हमें इस नतीजे पर पहुँचना है कि उस एक ईश्वर के सिवा कोई ईश्वर नहीं है। हम उस अकेले ईश्वर के आज्ञाकारी हैं। कोई भी वस्तू उसके सिवा उपासना के योग्य नहीं है। अगर कोई उस परमेश्वर के सिवा किसी की उपासना करता है तो वह अंधकार में है और सत्य मार्ग से भटका हुआ है।

वेदों में कहा गया है कि जो मनुष्य प्राकृतिक वस्तुओं की पूजा करता है, वह सत्य मार्ग से भटका हुआ है। यजुर्वेद का निम्नलिखित श्लोक स्पष्ठ रूप से उन लोगों के संबंध में है जो ईश्वर के सिवा पृथ्वी पर प्राकृतिक वस्तुओं की उपासना करते हैं।

अन्धात्मा प्रविशंति ये असंभूति मुपस्ते

वे अंधकार में प्रवेश करते हैं जो प्राकृतिक तत्वों (वायु, अग्नि इत्यादी) की उपासना करते हैं। वह अत्याधिक अंधेरे में डूब जाते हैं जो सम्भूती की उपासना करते हैं।

यजुर्वेद के इसी श्लोक में कहा गया।

वह अंधकार के घेरे में हैं। दूसरे शब्दों में अज्ञानता के ढ़लान में है और अज्ञानता की अत्याधिक गहराइयों में डूबे हुये हैं जो अनिर्मित और अनंत प्रकृति (संसार का भौतिक कारण) की सर्वस्व ईश्वर के स्थान पर उपासना करते हैं। लेकिन जो प्रकृति की पैदा की गयी सहदृश्य वस्तुओं जैसे पृश्वी, वृक्ष, शरीर (मानव और उस जैसे) की ईश्वर के स्थान पर उपासना करते हैं। वह और अधिक अंधकार में लिपटे हुए हैं। दूसरे शब्दों में वह अत्यंत मूर्ख और भयंकर नर्क के दर्द और दुखों में और बहुत लम्बे समय तक कठोरता से पीड़ित होंगे। (यजुर्वेद 40:9)

पृथ्वी पर अवतरित अंतिम संदेश पवित्र क़ुरआन भी इस बात को साफ-साफ इस प्रकार स्पष्ठ करता है।

वह जिसका राज्य है आकाशों और धरती पर और उसने न तो किसी को अपना बेटा बनाया और न राज्य में उसका कोई साझी है। उसने हर चीज़

को पैदा किया, फिर उसे ठीक अन्दाज़े पर रखा।

(पवित्र क़ुरआन 25:2)

देवता के संबंध में सही धारणा से दूसरे श्लोक में इस प्रकार सतर्क किया गया।

फिर भी उन्होंने उससे हटकर ऐसे इष्ट-पूज्य बना लिए जो किसी चीज़ को पैदा नहीं करते, बल्कि वह स्वयं पैदा किए जाते हैं। उन्हें न तो अपनी हानि का अधिकार प्राप्त है और न लाभ का। और न उन्हें मृत्यु का अधिकार प्राप्त है और न जीवन का और न दोबारा जीवित होकर उठने का। (पवित्र क़ुरआन 25:3)

और पवित्र क़ुरआन के दूसरे श्लोकों में सर्वशक्तिमान ईश्वर के गुणों का वर्णन किया गया है और साफ तौर पर यह कहा गया है कि वह यकता है सिर्फ वही उपासना के योग्य है।

अल्लाह कि जिसके सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं, वह जीवन्त-सत्ता है, सबको सँभालने और क़ायम रखने वाला है। उसे न ऊँघ लगती है न नींद। उसी का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है। कौन है जो उसके यहाँ उसकी अनुमति के बिना सिफ़ारिश कर सके? वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है। और वे उसके ज्ञान में से किसी चीज़ पर हावी नहीं हो सकते, सिवाय उसके जो उसने चाहा। उसकी कुर्सी (प्रभुता) आकाशों और धरती को व्याप्त है और उनकी सुरक्षा उसके लिए तनिक भी भारी नहीं है। और वह उच्च, महान है। (पवित्र क़ुरआन 2:255)

अल्लाह ही है जिसने आकाशों और धरती को और जो कुछ दोनों के बीच है छह दिनों में पैदा किया। फिर सिंहासन पर विराजमान हुआ। उससे हटकर न तो तुम्हारा कोई संरक्षक मित्र है और न उसके मुकाबले

में कोई सिफारिश करनेवाला। फिर क्या तुम होश में न आओगे?

(पवित्र क़ुरआन 32:4)

थोड़ी देर इस पर विचार किजिए,

वह वही है जो हमें खिलाता है, और वह वही है जो हमें हर वह चीज़ देता है जो हमारे लिए पृथ्वी पर जीवित रहने के लिए आवश्यक है। न ही वह प्यास का अनुभव करता है और न उसको भूख लगती है। उसे अपने जीवित रहने के लिए भोजन की आवश्यकता नहीं है।

साधारण लोग ईश्वर के समक्ष भोजन उपस्थित करते है, और वह विचार करते हैं कि यह (भोजन) स्वीकार कर लिया जाएगा और उनकी कामना पूरी हो जाएगी। बल्कि सत्यता यह है कि न ही वे (मूर्तियाँ) उसको खाते हैं और न ही सूँघते हैं।

मानव जाति के सत्य मार्ग दर्शन के लिए पवित्र ग्रंथ है। वह इन चीज़ों के करने की अनुमति नहीं देता है, और वह बतलाता है कि मानव को केवल एक सत्य ईश्वर की उपासना करनी चाहिए। उसी की बात माननी चाहिए। जबकि लोग हम जैसे लोगों के विचार की ओर आकर्षित होते हैं। अतः वह गलत मार्ग पर हैं। इस प्रकार वह बहुत सी बनावटी बात और खयाल के चक्कर में पड़ जाते हैं।

पवित्र ग्रंथ पृथ्वी पर समय-समय पर अवतरित होता रहा ताकि सत्य मार्ग की ओर लोगों का मार्ग दर्शन हो जाए और मानव एक सत्य जीवन व्यतीत कर सके। पैग़म्बरों ने पवित्र ग्रंथ में उल्लेखित संदेशों को पृथ्वी पर पहुँचाया। उन्होने जीवन की सत्यता का ज्ञान दिया। वह लोग जिन्होने उस शिक्षा का अनुसरण किया जो पवित्र ग्रंथ के अनुसार है, वह दोनों संसार में सफल हो जायेंगे। इस

प्रकार, सही मार्ग का अनुसरण करने में हमारे लिए इस संसार तथा इस संसार के बाद परलोक दोनों में मोक्ष की प्राप्ति है।

क्या हमें पवित्र ग्रंथ के अनुसार जीवन व्यतीत नहीं करनी चाहिए और इसका अनुसरण नहीं करना चाहिए?

हम दैनिक प्रयोग में आने वाली वस्तुओं में बहुत ग़ौर व फिक्र करते हैं। किसी संसारिक निर्णय करने से पहले हम दो से तीन बार विचार करते हैं। जो उस संबंध में निपुण होता है उससे राय लेते हैं। हम इधर–उधर इस संबंध में भटकते हैं। इन चीज़ों में हम अत्याधिक जागरुक होते हैं। हमारा दुर्भाग्य है कि हम उस अनंत जीवन को इतनी महत्वता नहीं देते हैं। जो वास्तविक जीवन है, असिमित और अनंत समय का है और इस संसार के बाद है। जिसका वर्णन सभी आकाशीय ग्रथों में है।

सर्वशक्तिमान ईश्वर ने हमें बुद्धि और जागरुकता इन चीजों पर विचार करने के लिए दी है। उसने इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की रचना की है। और हमें पृथ्वी पर परीक्षा के लिए भेजा है।

उन प्राकृतिक नियमों पर विचार करें जो ब्रम्हाण्ड को घेरे हुए है। जिसको ईश्वर ने बनाया है। पृथ्वी और चन्द्रमा के बनन के दिन से ही सूर्य नियमित रूप से बगैर किसी अन्तराल के उदय हो रहा है। कभी भी अपना मार्ग नहीं भूलता है और न ही पूरब से निकल कर पश्चिम में डूबने के कार्य में सुस्ती करता है। इसी तरह सभी खगोलिय पिंड पाबन्द हैं। और उसी नियम का अनुसरण करते हैं जिसको ईश्वर ने हम सबके लिए बनाया है।

प्रिय मित्रों

थोड़ा विचार करतें हैं (कि मनुष्य किस प्रकार जन्म लेता, किस तरह से

वह जवान होता है, और किस प्रकार वह मृत्यु की ओर यात्रा करते हुये उसकी गोद में समा जाता है। हमें थोड़ा विचार ब्रह्माण्ड की रचना के बारें में भी करना चाहिये कि ईश्वर ने वायु, जल, अग्नि, धरती, आकाश, सुर्य, चंद्र, सितारे, ये सब किस प्रकार से ब्रह्माण्ड की शोभा, मनुष्यों की आवश्यकतानुसार बनाया गया है। हमे इन बातो को दो दिशाओं से विचार करना होगा,

१) समय

थोड़ा पिछले कुछ १00 साल पहले जाकर या १000 साल या फिर १,00,000 साल, निर्मान के प्रारंभ के स्थिति की समीक्षा कीजिए।

२) स्थान

प्राँत के हिसाब से, देशो के हिसाब से विचार करो, जैसे इंड़िया, नेपाल, अमेरिका, ब्रिटेन आदि।

- परन्तु आदि काल से अब तक, मनुष्य के जन्म लेने के जो सिद्धाँत है, क्या वो बदला है?
- स्थानों के अनुसार मनुष्य के जन्म लेने के जो सिद्धाँत हैं, क्या कोई परिवर्तन आया है?

क्या जवाब देंगे?

हाँ या ना?

ज़रूर आपका उत्तर ना ही होगा। क्योंकि इंसान के जन्म की प्रकिया स्थान और समय से परे है और किसी भी समय में वही हैं।

शिशु जब माँ के गर्भ में होता है, तो उसका विकास समय के अनुसार होता रहता है। तो एक सवाल यहाँ पैदा होता है, कि उस शिशु के विकास में किसका योगदान है, माँ बाप का? या विज्ञान का? या डाक्टर का? या फिर सिर्फ और सिर्फ एक ईश्वर का? उत्तर के लिये विचार कीजिये॥॥॥ जवाब आपको मिल जाएगा, कि जिस अवस्था में शिशु गर्भ में होता है, वहाँ उसके

विकास के लिये न तो विज्ञान की पहुँच है न ही डाक्टर की और न ही शिशु के स्वयं माता-पिता की।

एक इंसान माँ के गर्भ से निकलते ही, शिशु का शरीर अपने आंतरिक अंगों के साथ बढ़ना प्रारंभ हो जाता है। यहाँ कुछ सवाल उठते हैः

- ऊपर कहा गये समय अवधि के अनुसार क्या हवा, पानी, आग आदि के विशेषताओं में कोई परिवर्तन हैं?
- ऊपर कहा गये स्थानों के अनुसार क्या हवा, पानी, आग आदि के विशेषताओं में कोई अंतर हैं?

क्या जवाब देंगे?

हाँ या ना?

ज़रूर आपका उत्तर ना ही होगा। क्योंकि हवा, पानी और आग का उपयोग किसी भी समय अवधि और किसी भी स्थान में हमेशा एक ही हैं। सूर्य नहीं बदला। इसका मतलब है

१) सूरज और धरती के बीच का फासला नहीं बदला।

२) धरती सूर्य के निरंतर चक्कर लगाना नहीं बदला। ये चाँद पर भी लागू होता है। इसका मतलब चाँद के धरती के चारों ओर घूमने में कोई परिवर्तन नहीं हैं और ना ही धरती के सूर्य के चारों ओर घूमनें में कोई परिवर्तन हैं। इसके अलावा, सूर्यग्रहण और चंद्र ग्रहण के गठन बंद नही हुआ।

- किसी भी युग में, क्या इन चीज़ो में कोई परिवर्तन हुआ हैं?
- स्थान के अनुसार, क्या इन चीज़ो में कोई परिवर्तन हुआ हैं?

क्या जवाब देंगे?

हाँ या ना?

आपका जवाब अवश्य नहीं ही होगा।

क्योंकि

१) चाँद, सूर्य, सितारों की चाल में अगर कुछ अंतर होता हैं तो हमारे पुराने पूर्वज जिस प्रकार से समय का गिनती रखते थे, सेकेंड, मिनट, और घंटों का, आज उसमें अंतर ज़रूर नज़र आता था।

२) उसी प्रकार से आज हम समय का गिनती नही करते, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि आज ६० सेकेंड का एक मिनट होता है तो पहले यह ज्यादा या कम सेकेंड का रहा होगा, बिलकुल नहीं, सारे संसार के देशों में ६० सेकेंड का मिनट और ६० मिनट का घंटा और २४ घंटे एक दिन का होता हैं।

इससे हमें यह ज्ञात हुआ कि ब्रह्माण्ड की रचना करने वाला एक ही हैं। हमेशा से वही ईश्वर एक है। जीवन और मृत्यु का मालिक भी एक है। जिसे हम अल्लाह, विधाता या रचयिता कहते हैं। आदि काल से लेकर अनंत काल तक वही एक है, और वही एक रहेगा।

लगभग सभी आकाशीय ग्रंथों में ईश्वर ने हमको प्रकृती में (प्रकृतिक वस्तुओं में) गहरा विचार करने को कहा है, ताकि हम इस सत्यता को स्वीकार करलें।

पवित्र क़ुरआन के एक श्लोक में अल्लाह कहता है।

फिर क्या वे ऊँट की ओर नहीं देखते कि कैसा बनाया गया? और आकाश की ओर कि कैसा ऊँचा किया गया? और पहाड़ों की ओर कि कैसे खड़े किये गए? और धरती की ओर कि कैसी बिछाई गई?

(पवित्र क़ुरआन 88:17-20)

लेकिन सत्यता यह है कि लोग अज्ञानता के शिकार हो गए हैं। यह अज्ञानता ही है जो लोगों को हर प्रकार के तर्कविहीन एवं आधारविहीन

कियाकलापों के करने की तरफ खींच कर लेजाती है।

मेरे प्यारे मित्रों

में आपसे अनुरोध करता हूँ कि एक बार बल्कि दो बार, तीन बार गौर करें लेकिन स्वयं को सत्यता से दूर न रखें। हमारे पास सोचने के लिए मस्तिष्क है ताकि सत्यता को अपनाएँ इन पवित्र मार्ग दर्शकों द्वारा प्रस्तुत सत्यता पर गौर करें। इनका अध्ययन करें बार-बार पढ़ें और गोर करें। संभव है कि आपके दिमाग में तार्किक प्रमाण बैठ जाए और अन्दर की सत्यता की चिंगारी भड़क उठे।

> सत्यता सर्वदा सफलता तक पहुँचाती है और असत्यता सर्वदा असफलता तक पहुँचाती है। क्योंकि झूठ (असत्यता) की प्राकृतिक रूप से पराजय होती है और सत्यता की विजय होती है।

के एक होने को समझना चाहिए। इस पुस्तिक में लिखित सभी बातें पवित्र ग्रंथों से इकट्ठा किये गये हैं और प्रमाणित हैं।

३ हिन्दु धर्म में ईश्वर की अवधारण

साधारणता से हिन्दु धर्म को बहुत अधिक देवताओं का धर्म समझा जाता है। अधिकांश हिन्दु कई देवताओं पर विश्वास करते हैं। कुछ हिन्दु भाई तीन देवताओं पर विश्वास करते हैं। कुछ तो तैतीस करोड़ देवताओं में विश्वास करते हैं। तथापि शिक्षित हिन्दू वर्ग जो अपने ग्रंथों का अच्छी तरह ज्ञान रखते हैं वह आग्रह करते हैं कि हिन्दु भाइयों को केवल एक ईश्वर की ही उपासना करनी चाहिए।

हिन्दूओ और मुसलमानों के ईश्वर के मानने के संदर्भ में प्रमुख अंतर है। हिन्दुओं का दार्शनिकता में विश्वास है। प्रत्येक जीवित तथा अजीवित वस्तुओं को ईश्वरीय और पवित्र मानते हैं।

अतः सर्वोश्वरवादी वह हर वस्तु को ईश्वर (भगवान) मानता है। वह वृक्षों, सूर्य, चन्द्रमा, बन्दर, साँप यहाँ तक कि मानव को भी ईश्वर का रूप कहते हैं। इसके ठीक विपरीत इस्लाम मानव पर ज़ोर ड़ालता है कि वह स्वयं को तथा आस-पास पायी जाने वाली वस्तुओं को ईश्वर की सृष्टि कहें, ईश्वर नहीं। अतः मुसलमानों का विश्वास है। हर वस्तु ईश्वर की हैं दूसरे शब्दों में मुसलमानों का ईमान है कि हर वस्तु का मालिक अल्लाह (ईश्वर) है। वृक्ष, सूर्य, चन्द्रमा, बन्दर, साँप, मानव तथा संसार की हर वस्तु का मालिक ईश्वर ही है।

अतः हिन्दु और मुसलमानों के विचार में प्रमुख अंतर सिर्फ कि का है। हिन्दु कहते हैं हर वस्तु ईश्वर है। मुसलमान कहते हैं हर वस्तु ईश्वर की है।

हिन्दु वेदों में ईश्वर के संबंध में धारणा वेदों का अध्ययन से हमें हिन्दुत्व में ईश्वर की धारणा का सही ज्ञान हो जाएगा।

भगवत् गीता

हिन्दु धर्म के धार्मिक ग्रंथों में सर्वाधिक लोकप्रिय ग्रंथ भगवत् गीता है। भगवत गीता के निम्नलिखित श्लोक पर विचार करें।

वह लोग जिनकी बुद्धिमता संसार की भौतिक वस्तुओं की इच्छा द्वारा चोरी कर ली गई। उन्होंने उपदेवताओं के समझ आत्मसमर्पण कर दिया है और विशेष नियमों का अनुसरण और पूजा कि प्रतिबंध को अपनी व्यक्तिगत स्वभावनुसार कर लिया है।

(भगवत् गीता 7:20)

ये श्लोक में, गीता बताती है कि जो लोग सच्चे ईश्वर को छोड़ कर भौतिकवादी उपदेवताओं की पूजा करते हैं।

तीन आत्मघाती दरवाज़ें ऐसे हैं जो नर्क की ओर मार्ग दर्शन करते हैं। वह हैं वासना, क्रोध एवं लोभ, इन तीनों से बचना चाहिए।

(भगवत् गीता 16:21)

भगवत् गीता का निम्नांकित श्लोक साफ-साफ बतलाता है कि ईश्वर के भेजे हुए वेदों का अध्ययन करना चाहिए एवं अपना जीवन ईश्वर के उस आज्ञानुसार व्यतीत करना चाहिए जो कि वेदों में वर्णित है, न कि अपनी इच्छानुसार व्यतीत करना चाहिए।

वह मनुष्य जो वेदों के निषेधाज्ञा का उलंघन करता है और अवास्तिविक रूप से व्यवहार करता है वह कभी भी सम्पूर्ण प्रसन्नता एवं सर्वोच्च लक्षय को पा नही सकता है।

(भगवत् गीता 16:23)

इसलिए कर्तव्याँ से संबंधित वेदों का निषेधाज्ञा और कत्वर्यहीनता सर्वोच्च न्यायालय द्वारा पूर्व निर्णित है। वेदों के कार्य की योजना की समझकर जो विशेषरूप से ईश्वर के आनन्द के लिए की जाती है ये तुम्हारे योग्य है कि इन शिक्षाओं को प्रयोगात्मक रूप से लागू करें। (भगवत् गीता 16:24)

उपनिषद

हिन्दु उपनिषद को पवित्र ग्रंथ मानते हैं। उपनिषद का निम्नलिखित श्लोक

एकम एवद्वितियम

वह एक है उसका कोई द्वितीय नही है

(छान्दोग्य उपनिषद 6:2:1)

न चास्य कश्चिज्जनिता न चधिपः

उसको न ही पिता है और न ही कोई स्वामी है।

(स्वेतास्वत्र उपनिषद 6:9)

न तस्या प्रतिमा अस्ति

उसकी कोई आकृति नही है।

(स्वेतास्वत्र उपनिषद 4:19)

उपनिषद के निम्नलिखित श्लोक इस बात की ओर संकेत करते हैं कि मानव ईश्वर की कल्पना किसी विषेश रूप में करने के योग्य नहीं है।

न संदृशे तिष्टति रूपमस्या, नचक्षुषापश्यति कश्चनैनम।

उसका रूप अदृश्य है, कोई भी उसे आँखों से नहीं देख सकता है। (स्वेतास्वत्र उपनिषद 4:20)

वेद

वेद हिन्दू धर्म ग्रंथों में सर्वाधिक पवित्र विचार किया जाता है। चार प्रमुख वेद इस प्रकार हैं।

(१) ऋगवेद (२) यजुर्वेद (३) सामवेद (४) अथर्ववेद।

ऋगवेद:

ग्रंथों में प्रचीनतम् ग्रंथ ऋगवेद है। हिन्दु इसे सर्वाधिक पवित्र मानते हैं।

शिक्षित पुजारी एक ईश्वर के कई गुणों में वर्णन करता है।

(ऋगवेद 1:164:46)

ईश्वर के कई गुणों में से एक प्रमुख गुण ब्रह्मा जो किताब २ स्तुति १ श्लोक ३ में वर्णित हैं। ब्रह्मा का अर्थ हैं सृष्टिकर्ता। जिसका अरबी भाषा में अनुवाद खालिक (सृष्टिकर्ता) है। ईश्वर को कोई आपत्ति नहीं है अगर सर्वशक्तिमान ईश्वर को खालिक, सृष्टिकर्ता एवं ब्रह्मा के नाम से उल्लेख करें। तथापि यह कहा जाए कि ब्रह्मा सर्वशक्तिमान ई श्वर है जिसके चार शीर्ष हैं जिन पर एक मुकुट है तो ईश्वर उसे स्वीकार नहीं करेगा और यह सर्वशक्तिमान ईश्वर के कथन का सतप्रतिशत उलंघन करना है।

ऋगवेद का निम्नलिखित श्लोक सर्वोच्च परमात्मा के एक होने तथा गौरव को बतलाता है।

मा सिद अन्यद वी सन्सता सखयो मा ऋषंयता।

हे मित्र, इसके अलावा किसी की भी पूजा न करो जो परमेश्वर है केवल उसी की स्तुतिकरो। (ऋगवेद 8:1:1)

देवस्या समितुक परिश्तुतीह

वास्तव में सृष्टिकर्ता का यश अत्यधिक है। (ऋगवेद 51:81)

हे परमेश्वर, तू सबका मित्र, जो सर्वाधिक पवित्र है, ब्रह्माण्ड का नियत्रक और काबू करनेवाला है। हम पर दयालु होजा, हे सर्वशक्तिमान संसार का स्वामी, जो सब की सहायता करता है। हमें ज्ञान और शक्ति दें। हे सर्वशक्तिमान एवं सर्वस्व, तू हम सब के चारो ओर अपना आशिर्वाद बरसा।

(ऋगवेद 1)

वह एक है परन्तु बुद्धिमान लोग उसे विभिन्न नामोंसे पुकारते हैं। जैसे इन्द्र, मित्र, वरूण, अग्नि, दिव्या (दिव्या उसे कहते हैं जो सभी चमकीले शरीरों मे घुस जाते हैं) प्रकाशपुंज, सुपरना (संसार की सुरक्षा और इसकी देखभाल करने वाला) इत्यादि उसका कार्य बिल्कुल ठीक-ठीक होता है।

(ऋगवेद 1:22:164)

एक अज्ञानी व्यक्ति के पास आँखें हैं परन्तु वह कुछ नहीं देखता है। उसके पास कान हैं परन्तु कुछ नहीं सुनता है, जीभ भी तो है परन्तु कुछ नहीं बोलता है। अज्ञानी शिक्षा के छुपे रहस्य को कभी नहीं समझ सकता है। ज्ञान ज्ञानी पर अपनी प्राकृतिक सत्यता प्रकट करता है। जैसे कि एक स्त्री जो अपने पति से मिलन की इच्छा रखने वाली हो खूब बनाव श्रंगार करती है ताकि अपनी सुन्दरता और खिंचाव पति के लिए प्रकट कर सके। (ऋगवेद 10:17:4)

वेद उसे क्या लाभ पहुँचा सकती है जो महान हस्ती को नहीं जानते हैं जो सर्वव्याप्त और अनंत है। सर्वाधिक पवित्र जो सूर्य एवं पृथ्वी को काबू में रखनेवाला है।

वह अधर्मी, कम बुद्धि रखने वाला तथा पीड़ा व संकट की गहराइयों में निरन्तर धसनेवाला है जो इस हस्ती पर विश्वास नहीं रखता है और न ही उसे जानता है और न ही उसके नाम से प्रारंभ करता है,

जो हस्ती ज्योतिर्मय (बहुत चमकीला) सर्व पवित्र, सर्वज्ञानी सूर्य, पृथ्वी एवं दूसरे ग्रंथों को बरकरार रखने वाला, जो इथर के समान सर्वव्याप्त है। जो उन देवताओं का भी स्वामी है जो वस्तुओं को प्रकाशित करने और व्याख्या करने में सक्षम है। सिर्फ ईश्वर के ज्ञान तथा ध्यान से हर मानव को सच्चा सुख प्राप्त हो सकता है।

(ऋगवेद 1:164:39)

हे मानव, सर्वोच्च आत्मा, (जो प्रत्येक प्रकाशित पिंडों का सहारा है) से प्रेम करो तथा उसी की उपासना करो। एक परमेश्वर जिसका कोई दूसरा नहीं है। वर्तमान तथा भविष्य संसार का स्वामी है। जो संसार सृष्टि से पहले से मौजूद था और हर उस वस्तू का बनानेवाला है जो पृथ्वी और आकाश के बीच अंतरिक्ष में मौजूद है।

(ऋगवेद 10:121:1)

क्या आप को पता है कि मानव दो प्रकार के होते हैं– एक आर्य दूसरा दस्यू।

धर्मपरायण, ज्ञानी, अस्वार्थी, कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति को आर्य कहा जाता है जबकि विपरीत आचरण वाले को दस्यू कहा जाता है। विपरीत आचरण जैसे डकैत, कमीना, बेइन्साफ तथा अधर्मी इत्यादि होना।

(ऋगवेद 1:51:8)

जिस तरह ईश्वर ने सूर्य, चंद्रमा, पृथ्वी, दूसरे ग्रह तथा पहले की वस्तुओं को पैदा किया इसी तरह उसने वर्तमान सृष्टि को भी पैदा किया। (ऋगवेद 10:190)

हे परमेश्वर, तू ही ब्रह्माण्ड तथा वेदों की सुरक्षा करनेवाला है और सर्वशक्तिमान की कला और प्रकृति में पवित्रता उस मानव आत्मा के द्वारा नहीं पहुँच सकती जो ज्ञान के नियंत्रण के द्वारा शुद्ध नहीं हुई है। (ऋगवेद 9:83:1)

हिन्दुत्व का ब्रह्मसूत्र

हिन्दूओं का ब्रह्मसूत्र है।

एकम ब्रहम द्वितीय नास्ते नेह ना नास्ते किंचन

एक ही ईश्वर है, दूसरा नही है, बिल्कुल नहीं है, बिल्कुल नहीं है, है ही नही (ऋगवेद समहिता जिल्द 9 सफ 2810 और 2811 लेखक स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती, और सत्याकम विध्यालंकर)

(ऋगवेद समहिता जिल्द 6 सफ 1802 और 1803)

ऋगवेद का उपरोक्त मंत्र स्पष्ठ रूप से बतलाता है कि एक सत्या ईश्वर के सिवा कोई दूसरा नहीं है जिसने इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की सृष्टि की है। इसी कारण हमें सत्य ईश्वर के स्थान पर किसी दूसरे की उपासना करने के पश्चात गंभीरता से सोचना चाहिए।

अगर हम वह कार्य करते हैं जो पूरे तौर पर ईश्वर के भेजे हुए ग्रंथों के विरुद्ध है तो कैसे हम सोच सकते हैं कि हम सही मार्ग पर हैं और हमें मोक्ष की प्राप्ती हो जाएगी। इस प्रकार, हिन्दु धर्म में ग्रंथों का पक्षपात हीन ढंग से अध्ययन ही किसी व्यक्ति को हिन्दु धर्म में ईश्वर की अवधारण के समझने में सहायक हो सकता है। यजुर्वेद का निम्नलिखित श्लोक भी ईश्वर के धारण को दोहराता है। सर्वशक्तिमान ईश्वर के समान किसी मूर्ती का बताना यजुर्वेद की शिक्षा के बिल्कुल विपरीत है।

न तस्या प्रतिमाः अस्तिः

उसकी कोई आकृति नहीं है। (ऋगवेद 32:3)

ईश्वर का और एक सुन्दर गुण **विष्णु** है जो ऋगवेद में वर्णित है ऋगवेद के किताब 2 स्तुति 1 श्लोक 3)। **विष्णु** का अर्थ पालनहार है। अरबी में इसका अनुवाद रब से किया गया है। पुनः

ईश्वर को कोई आपत्ति नहीं है चाहे उसे रब से बुलाया जाए या पालनहार से या विष्णु के नाम से पुकारा जाए। परन्तु हिन्दुओं के बीच विष्णु की जो लोकप्रिय आकृति है कि वह भगवान है जिसके चार हाथ है, दायें हाथ में एक चक्र पकड़े हुए हैं, बायें हाथ में शंख है, एक पक्षी पर सवार हैं या साँप पर बैठे हुए हैं। जो लोग ईश्वर की आकृति बनाते हैं ईश्वर उन्हें कभी नहीं क्षमा करेगा जैसा कि अभी-अभी उल्लेख किया गया है। यह स्वेतस्वत्र उपनिषद पाठ **4** श्लोक **19** में कहे गये कथन के विपरीत है।

न तस्या प्रतिमाः आस्तिः

उसकी कोई आकृति नहीं है।

शुद्धमा पोपविद्धम

वह शरीर विहीन एवं पवित्र है। (यजुर्वेद 40:8)

अन्धात्मा प्रविशन्ति ये असम्भुति मुपस्ते

जो प्राकृतिक वस्तुओं की पूजा करते हैं वे अंधकार में प्रवेश कर जाते हैं। वे अंधकार की गहराई में डूब जाते हैं जो सम्भुति की उपासना करते हैं। सम्भुति का अर्थ है बनायी हुई वस्तु जैसे टेबल, कुर्सी, मूर्ती इत्यादि।

(यजुर्वेद 40:9)

वह भूमि का पैदा करने वाला है जो सभी का निवास स्थान है।

(यजुर्वेद 13:18)

तब विराट बनाया गया।

तब भूमी बनायी गई। (यजुर्वेद 31)

प्रारंभ में हिरन्यागर्भ्य, सृष्टि का एक स्वामी था, जो सूर्य तथा पृथ्वी का पालनहार है। हम उसी की वन्दना करते हैं जो धन्य है। (यजुर्वेद 13:4)

गायत्री मंत्र

ओम भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं। भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

हे स्वामी, मानवीकरण का सच्चा अस्तित्व, बुद्धि, परम सुख है सत्य अस्तित्व के रूप सर्वदा रहनेवाला (अमर) पवित्र, सर्वाधिक बुद्धिमान, सर्व दा रहनेवाला तू पैदा नहीं हुआ, बगैर किसी विशेष चिन्ह और संगठन के सवस्य ब्रह्माण्ड का पालनहार तथा शासक है, हर सनातन का पालनहार, ब्रह्माण्ड का संरक्षक तथा सुरक्षा करने वाला है, सर्वव्याप्त आत्मा है दया के सागर तेरी कला सृष्टि का जीवन है तेरी कला सब परमसुख में रहे हमारे पीड़ा तथा दुख को दूर करता है। तू ब्रह्माण्ड का पालनहार है, सब का सृष्टिकर्ता हमें पवित्र पूजनीय प्रकृति पर विचार करने वाला बना ताकि तू मेरी समझ का मार्ग दर्शन करे। तू हमारा ई श्वर है। तू केवल पूजनीय तथा उपासना के योग्य है। तेरे सिवा कोई नहीं है जो तेरे समान हो या तुझ से ऊपर हो। तू अकेले हमारा सृष्टिकर्ता, शासक, तथा न्यायधीश है। तू अकेले प्रसन्नता प्रदान करता है। (यजुर्वेद 36:3)

मेरे प्रिय मित्रों।

वेद के उपरलिखित पंक्ति में सर्वशक्तिमान ईश्वर के संबंध में साफ-साफ, विशेष रूप से बतला दिया गया कि केवल एक ही ईश्वर है और उसके समान कोई नहीं है। हमें सिर्फ उसी की उपासना करनी चाहिए। यहाँ मै आपको उपर वर्णित गायत्री के संबध में समझाना चाहता हूँ। यह वास्तव में वेद का एक श्लोक है।

(यजुवेद पाठ 36 श्लोक 3) गायत्री संस्कृत शब्द है जो दो मूल शब्द गाया तथा अत्री, से निकला है। गाया उस ध्वनि को कहते हैं जो गला से निकलती है। अत्री का अर्थ है वन्दना।

इस प्रकार **गायत्री का अर्थ हुआ अपने गला द्वारा मंत्र पढ़ कर ईश्वर की वन्दना करना** इस मंत्र में ईश्वर इस सत्यता का ऐलान कर रहा है कि उसके लिए कोई विशेष चिन्ह नहीं है। परन्तु लोगों के पास इतना समय नहीं है कि इस सच्चाई को जानें। लोग अब भी गायत्री से एक स्त्री के रूप की कल्पना करते हैं। और उसकी पूजा भी करते हैं। लेकिन अगर वास्तव में वह उपदेवी है अर्थात सत्य परमेश्वर के अतिरिक्त एक परमेश्वर है। तो ऐसा संभव ही नही है।

सर्वशक्तिमान ईश्वर कैसे लोगों के द्वारा की गई अपनी इस निन्दा को क्षमा करेगा?

एक सर्वशक्तिमान शासक द्वारा यह ब्रह्माण्ड फैलाया है। यहाँ तक कि हर संसार जो प्रकृति के सम्पूर्ण मंड़ली में है। वही सच्चा ई श्वर है उस से डरो, हे मानव, किसी जीवित प्राणी की सम्पत्ति का अन्यायपूर्वक लोभ न करो, अन्याय को छोड़ दो और खूब आनंद उठाओ। (यजुर्वेद 40:1)

हे मानव, वह ईश्वर ब्रह्माण्ड के निर्मान से पहले से मौजूद है। वह सृष्टिकर्ता, मददगार, सूर्य तथा दूसरे प्रकाशित पिण्ड़ों का पालनहार है। वह पिछले सृष्टि का प्रभु है। वह वर्तमान का ईश्वर है। वह अजनित ब्रह्माण्ड का भी ईश्वर होगा। उसने सम्पूर्ण संसार को पैदा किया और उसको थामे हुए है। वह सनातन मोक्ष है। सब उसकी प्रशंसा तथा पुजा करें जैसा कि हम करते हैं। (यजुर्वेद 13:4)

वह शरीरवाला कभी नहीं था न ही वह कभी पैदा हुआ, वह कभी भी विभाजन के योग्य नहीं है। तंत्रिकाओं अथवा धमनी पद्धतियों से स्वतन्त्र है वह कभी नहीं पाप करता है न ही उसको कभी पीड़ा न दुख, न अज्ञानता न ही इस जैसी कोई और चीज़ होती है। (यजुर्वेद 30:8)

ब्रह्माण्ड का महान शासक वह स्वयं स्तित्व, सर्वव्यापी पवित्र, अनंत एवं आकारविहीन, वह अनंत से अपने अधीनो को उपदेश देता

रहा है, वह अमरशील आत्मा है, वेदों के द्वारा उनकी भलाई के लिए हर प्रकार का ज्ञान देता है। (यजुर्वेद 40:8)

हे मानव, सर्वव्याप्त अकेले प्रकृति का स्वामी, संसार का भौतिक कारण एवं आत्मा दोनों से भिन्न है। ब्रह्माण्ड (भूत वर्तमान, तथा भविष्य) का रचयिता है। वह सर्वेच्च आत्मा जिसने हर वस्तु की रचना की तथा उसका पालनहार है। (यजुर्वेद 21:2)

ईश्वर जिसने प्रकाशित शरीर (उदाहरणस्वरूप सूर्य) तथा अप्रकाशित शरीर (जैसे पृथ्वी) की रचना की, तथा इन का पालनहार है। (यजुर्वेद 13:4)

पृथ्वी अपने सम्पूर्ण जल के साथ सूर्य के चारों ओर घूमती है। (यजुर्वेद 33:43)

आकारविहीन सर्वेच्च आत्मा जो ब्रह्माण्ड में सर्वव्याप्त है एवं वह कोई भौतिक प्रतिनिधित्व समानता या आकृति नहीं रखता है। (यजुर्वेद 32:3)

हे स्वामी, जो गौरवशाली, अपनी कृपा द्वारा मुझे तत्काल ही ऐसी बुद्धिमता दे जिसकी प्रार्थना बुद्धिमान, ज्ञानी तथा योगी करते हैं। (यजुर्वेद 32:14)

तुम प्रकाश हो मुझ पर कृपा कर और इस प्रकाश को मेरे हृदय में ड़ाल दे, तेरी शक्ति असिमित तथा कभी समाप्त न होने वाली है। तू मुझे भी कभी समाप्त न होने वाली शक्ति दे। तेरी उर्जा अनंत है अतः मुझे भी अनन्त उर्जा दे। तेरा प्रभाव अनन्त है, तू मुझे भी अनन्त प्रभाव दे। तुम दुर्जन के लिए अति क्रोधित हो, मुझको भी दुर्जन के लिए अति क्रोधित बना दे। न तू बुरा कहने से प्रभावित होता है और न ही वन्दना करने से। तू जिस तरह अपने विरोधी के लिए बोझ हो हमें भी बोझ बना दें। (यजुर्वेद 20:9)

हे दया के सागर, अपनी कृपा से मेरे उस दिमाग को जो जागने की दशा में लम्बी-लम्बी दूरी तय करता है और करोड़ो गुण रखता है जो स्वयं उसी मस्तिष्क को जो अनुभव का स्त्रोत है निन्द्रा अवस्था में गहरी नींद पाता है और स्वप्न में भिन्न-भिन्न स्थानों पर घुमता है और शुद्ध विचारों का आनन्द अपनी भलाई के लिए और साथ-साथ दूसरे जीवधारी की भलाई के लिए लेता है। और वह कभी किसी को घायल करने की इच्छा नहीं करता है। (यजुर्वेद 34:1)

हे मेरे स्वामी, मेरा मस्तिष्क जो सर्वाधिक ज्ञान के खज़ाने को जमा करने वाला है। जागरूकता तथा न्याय, स्मरण का प्रकाश और अमर है। मस्तिष्क जिसके बिना मनुष्य शक्तिहीन है मस्तिष्क के बिना मनुष्य कुछ नहीं कर सकता है। (यजुर्वेद 34:3)

यजुर्वेद का निम्नलिखित श्लोक प्रार्थना पर इस प्रकार रोशनी ड़ालता है।

हमें अच्छा मार्ग दिखा और ऐसे पाप से दूर रख जो हमें (सीधे मार्ग से)विचलित तथा बहका दे।

(यजुर्वेद 40:16)

देवी चन्द के द्वारा लिखित यजुर्वेद समहीता पृष्ठ संख 377

समहीता रल्फ टी एच ग्रिफिथ 538

ऊपर लिखित श्लोक जैसी प्रार्थना को पवित्र कुरआन अपने पहले पाठ में इस प्रकार उजागर करता है।

हमें सीधे मार्ग पर चला। उन लोगों के मार्ग पर जो तेरे कृपापात्र हुए, जो न प्रकोप के भागी हुए और न पथभ्रष्ठ।

(पवित्र कुरआन 1:6,7)

सामवेद

हम तेरे समक्ष झुकते हैं, हे प्राणा-जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को काबू में

रखता है तथा उसपर शासन करता है। जैसे कि शरीर के भीतर महत्वपूर्ण शक्ति सम्पूर्ण शारीरिक किया को काबू में रखती है और उस पर शासन करती है। (सामवेद 7:3:8:16:2:3:2)

यही अथर्वेद में इस प्रकार कहा गया है:

अथर्ववेद

अथर्ववेद ईश्वर की वन्दना इस तरह करता है।

देवी महा ओसी

वास्तव में ईश्वर महान है। (अथर्ववेद 20:58:3)

वह इन्द्र (सर्वशक्तिमान) है। (अथर्ववेद 11:2:1)

ईश्वर वह है जो समय से प्रभावित नहीं होता है और वह अमर है जो सूर्य, पृथ्वी तथा दूसरे ग्रहों को काबू में रखता है। (अथर्ववेद 14:1:1)

सूरज द्वारा जिस तरह मानव प्रकाशित हो जाता है इसी तरह दूसरे ग्रह (जैसे पृथ्वी) भी सूर्य की धूप से प्रकाशित हो जाते हैं। (अथर्ववेद 14:1)

४ सूप्रभातम का अर्थ

कौशल्या सुप्रजा रामा।
हे रामा, कौसल्या के सुपुत्र
पूर्व संध्या प्रवर्तते।
उषा आलोक काल पूर्व में हो रहा हैं
उत्तिश्टा नरसार्दूल।
हे पुरूषों में सर्वश्रेष्ट पुरूषोत्तम उठिये
कर्तव्यं दैवमान्विकम।
ईश्वर की उपासना करना तुम्हारा कर्तव्य है

मेरे प्रिय मित्रों,

ऊपर सुप्रभातम की पंक्तियों को हम सभी जानते हैं परन्तू इसका अर्थ हम में से अधिकतर को पता नहीं है। ऊपर लिखित सुप्रभातम तथा उसके अर्थ पर यदि हम सोच व विचार करें और ध्यानपूर्वक पढ़ें तो हमें साफ–साफ इस बात का ज्ञान हो जाएगा कि राम एक मनुष्य थे जो कौशल्या से पैदा हुए और वह स्वंय सूर्योदय के पश्चात् प्रति दिन सर्वशक्तिमान ईश्वर की अराधना किया करते थे।

यदी हम वास्तव में राम से प्रेम करते है और हम राम का अनुसरण करना चाहते हैं तो हम भी उसी ईश्वर की उपासना करें जिस की राम ने सम्पूर्ण जीवन उपासना की है।

उपनिषद का निम्नलिखित श्लोक बतलाता है कि ईश्वर का कोई पिता नहीं है। इस प्रकार राम सर्वशक्तिमान ईश्वर नहीं हो सकता है जब कि वह (राम) उस सर्वशक्तिमान ईश्वर के लिए दैनिक ईश्वरीय धार्मिक कार्य किया करते थे जिसने हम सब की रचना की है।

उसके न ही पिता है और न ही स्वामी है।

(स्वेतास्वत्र उपनिषद 6:9)

५ साई बाबा की शिक्षा

साई बाबा पूरे जीवन में नित्य तीन मन्त्रों को पढ़ा करते थे।

सबका मालिक एक है।

अल्लाह मालिक।

अल्लाह भला करेगा।

मेरे प्रिय मित्रों,

साई बाबा एक फकीर एवं पक्के मुसलमान थे। वह नियमित रूप से दैनिक प्रार्थना किया करते थे। वह क़ुरआन पढ़ते, उपवास रखते तथा निर्धनों को दान करते थे।

साई बाबा सुबह सवेरे उठा करते थे तथा सर्वप्रथम प्रार्थना में सम्मिलित होते थे।

(साई बाबा द मास्टर लेखक आचार्य ई भारद्वाज पृष्ठ सं 139

साई बाबा स्वयं कहते थे।)

मै ईश्वर का भक्त हूँ। ईश्वर ही स्वामी एवं मालिक है।

(साई बाबा द मास्टर लेखक आचार्य ई भारद्वाज पृष्ठ सं 228)

साई बाबा लोगों को ईश्वर को जपने तथा क़ुरआन पढ़ने का निर्देश देते रहते थे।

साई बाबा स्वच्छ रूप से कहा करते थे कि अल्लाह के सिवा कोई नहीं है। अल्लाह निर्धनों का संरक्षक है। उसके सिवा कोई नहीं है।

(साई बाबा द मास्टर लेखक आचार्य ई भारद्वाज पृष्ठ सं 235)

साई बाबा स्वयं कहते थे कि वह अल्लाह के बन्दे हैं।)

वह किसी के भक्त नहीं है वह केवल अल्लाह के भक्त हैं।

अल्लाह का नाम सनातन है, अल्लाह सर्वोसर्वा है।

(साई बाबा द मास्टर लेखक आचार्य ई भारद्वाज पृष्ठ सं २३६)

साई बाबा के संबंध में इन सभी सत्यता को जान लेने के बाद कैसे अब हम अल्लाह को छोड़ कर उनकी पूजा कर सकते हैं। यदी हम साई बाबा से वास्तव में प्रेम करते हैं तो हमें उनकी शिक्षा का अनुसरण करना चाहिए और इसी तरह अपना जीवन व्यतीत करना चाहिए जिस तरह साई बाबा ने अपना जीवन व्यतीत किया है। यदी साई बाबा ई श्वर होते तो वह यह कहते कि **सबका मालिक मैं हूँ** , लेकिन यह बात उन्हों ने पूरे जीवन में कभी नहीं कही।

६ ईसाई मज़हब में ईश्वर का उल्लेख

पहले तो किताब के पाठकों से यह अनुरोध है कि ईसायों के विचार उनके ईश्वर मानने का तरीका, उनकी श्रद्धा, आस्था सब एक दम भिन्न है, उनकी किताब जो देवदूत ईसा के पास ईश्वर दे दिया वह पूरी तरह बदली जा चुकी है, पैगम्बर ईसा (अ) ने हमेशा एक खुदा का प्रचार किया, वही लोगो को सिखाया, उनके बाद लोगो ने तोरह तरीके उसमें मिला दिये, और एक के बजाय तीन खुदाओं का विचार लिख दिया, जिसमें माता मरयम को ईश्वर की पत्नी के रूप में बताया गया, पैगम्बर ईसा को खुदा का बेटा बताया गया और ईश्वर को मरयम का पति और ईसा (अ) को उनका बेटा। बाईबल के कुछ अंश जो नहीं बदले गये अब तक, उन्हें आपके सामने प्रस्तुत करने की कोशिश कर रहे हैं।

मुझ से पहले कोई खुदा नहीं और न ही मेरे बाद कोई होगा। मैं ही यहोवा हूँ (यहोवा का मतलब ज़िंदगी देने वाला)। मेरे सिवा कोई संसार की रक्षा करने वाला नहीं।

(बाईबल युशिया 10:43)

बाईबल के मुताबिक ईश्वर जीवन, मृत्यु से परे है

किन्तु केवल यहोवा ही सच्चा परमेश्वर है। वह एकमात्र परमेश्वर है जो चेतन है। वह शाश्वत शासक है।

(बाईबल यरमिया 10:10)

ईसा (अ) कहते हैं बाईबल में,

मुझे ऐसे पिता ने भेजा तुम्हारी तरफ जिसे कभी मृत्यु नही।

(बाईबल युहान 6:57)

बाईबल के संदर्भ से कहा गया कि खुदा कभी मनुष्य रूप में धरती पर नहीं आया।

अवश्य ईश्वर, इस धरती में मनुष्य रूप में जीवन यापन नही करता। तुझको सारा आकाश और स्वर्ग के उच्चतम स्थान भी धारण नहीं कर सकते। (बाईबल राजा 8:27)

ईश्वर के बोल बाईबल है कि

ईश्वर झूठ बोलने के लिये न तो मनुष्य है, और न ही उसका बेटा। (बाईबल गिनती 23:19)

ईसा (अ) खुद संदेश देते हुये कहते है–

केवल हमारा ईश्वर ही एकमात्र प्रभु (यहोवा) है। समूचे मन से, समूचे जीवन से, समूची बुद्धि से और अपनी सारी शक्ति से तुझे अपने ईश्वर से प्रेम करना चाहिये।

(बाईबल मारको 12:29)

मित्रो, हमारा यह विश्वास है कि ईसा (अ) ईश्वर के दूत (पैगम्बर) है उन्होंने सच्चा और संसार के बनाने वाले का मार्ग दिखाया। उन्होंने दया, शांति, और करूणा का मार्ग दिखाया, कभी भी अपने आप को ईश्वर का बेटा या ईश्वर नही कहा, तो फिर हम कैसे उन्हें ईश्वर मानकर या ईश्वर का बेटा मानकर पूज सकते है?

थोड़ा विचार कीजिए–

किन्तु जब तू प्रार्थना करे, अपनी कोठरी में चला जा और द्वार बन्द करके गुप्त रूप से अपने परम-पिता से प्रार्थना कर। फिर तेरा परम-पिता जो तेरे छिपकर किए गए कर्मो को देखता है, तुझे उन का प्रतिफल देगा।

(भाईबल मत्ती 6:6)

आपको क्या समझ में आया.....?
हमें किसकी आराधना करनी चाहिए?
ईश्वर की या ईश्वर के दूत की?
आप खुद ही निर्णय कीजियँ

७ हमारे पास जो कुछ है ईश्वर की कृपा है

जिस संसार में हम निवास करते हैं। अल्लाह हम पर असिमित तथा अपरिमित कृपा करता है। वही है केवल जो दाता भी है पालनहार भी है साथ-साथ काबू में रखने वाला भी। आइये, हम ज़रा अपने दैनिक प्रकियाओं को उदाहरण बनायें।

प्रातः काल हमारे उठने के समय से लेकर हमारे रात्री में सोने के लिए जाने तक हमें बहुत सी वस्तुओं की आवश्यक्ता होती है और हमें कई परिस्थियों का सामना भी करना पड़ता है। संक्षेप में यह कि हम इन सारी वस्तुओ को ईश्वर की कृपा के बगैर नहीं कर सकते। हम अपने तौर पर कुछ नहीं कर सकते हैं।

हम जीवन भर साँस लेते हैं। हमें कभी भी इसके लेने में कठिनता का अनुभव नहीं होता है क्योंकि हमारी श्वासन नलिकाएँ बिल्कुल ठीक काम कर रही हैं।

जैसे ही हम आँख खोलते हैं हम देखने लगते हैं। दूर की वस्तुओं को साफ-साफ, तीनों ओर (लम्बाई चौड़ाई, तथा ऊँचाई) से रंगा रंग हमारी आँखें देखती हैं।

हम भिन्न-भिन्न प्रकार की चीजों को चखते हैं जिसका स्वाद विभिन्न प्रकार का होता है। हम जिस भोजन को खाते हैं उसमें एक नियमित मात्रा में विटामिन, खनिज, कार्बोहाइड्रेट और प्रोटीन होते हैं। मानव शरीर एक अद्भुत मशीन है, जिसके अन्दर उपापचय प्रकिया होती रहती है। इस प्रकार का सभी कार्य ईश्वर के द्वारा ही नियंत्रित होता है। प्रायः हमें अपने शरीर में होने वाले इन जटिल प्रकियाओं का ज्ञान भी नहीं होता है।

जब हम किसी वस्तु को हाथ में लेते हैं, तुरंत हमें अनुभव हो जाता है कि यह मुलायम है अथवा कठोर है, ठंड़ा है कि गर्म है। हमें इस अनुभव के लिए किसी धातू की आवश्यक्ता नहीं होती है।

हमारे शरीर में ऐसी बहुत सारी गतिविधियाँ अपने आप होती रहती हैं। इन सरगरमियों का उत्तरदायी शरीर के अंगों का जटिल सिस्टम है। मानव शरीर की प्रक्रियाएँ एक कारखाने की तरह हैं। यह प्रक्रियाएँ जटिल तथा मानव के सोच व विचार से ऊपर है। मानव शरीर ईश्वर की ओर से मानव को दी जाने वाली एक बहुत बड़ी कृपा है।

इस जगह एक प्रश्न का उत्तर देने से रह जाता है????

शरीर को जीवित तथा चलाने के लिए जिस कच्चे पदार्थ की आवश्यक्ता होती है वह कैसे पूर्ति की जाती है। इस बात को इस तरह भी कहा जा सकता है कि जल, वायु तथा वह सभी पौष्टिक आहार जो जीवन के लिए आवश्यक है, कैसे पैदा हुए?

आइये हम विभिन्न प्रकार के फलों एवं सब्जियों में विचार विमर्श करें उदाहरणस्वरूप खरबूजा, तरबूजा, चैरीज, नारंगी, आलू, टमाटर, मिर्च , अनन्नास, शहतूत, अंगूर, गन्ना, इमली, करेला इत्यादी। सभी भूमि में बीजों से उगते हैं। कभी-कभी बीजों की बनावट लकड़ी की तरह कठोर होती है। अतः हमें इन सच्चाइयों में गोर व फिक्र करके तथा स्वभाविक सोचने के अन्दाज को बदल कर दूसरा अच्छा तरीका अपनाना चाहिए। गन्ना तथा नीम के विषय में सोचना चाहिए कि दोनों एक ही भूमि की पैदावार है। हमें अतिस्वादिष्ट जैसे तरबूज़ा तथा अतिकड़वा करेला पर विचार करना चाहिए। वह कौन है जो एक को मिठिए और दूसरे को कड़वा कर रहा है? भूमि की सतह के अन्दर पानी है उसे कौन २००-३०० मीटर ऊचे वृक्ष के हर-हर अंग में पहुँचा रहा है? फूलों का रंग, आकार, गंध अलग-अलग हैं, यह कौन कर रहा है?

वैज्ञानिक अत्याधिक प्रयास तथा कठिन परिश्रम के बाद भी इस प्रकार की चीज़ नहीं बना सका उसकी तमाम कोशिशें विफल हुई। श्वाद, रंग, गंध इत्यादी यह प्रकृतिक वस्तुएँ हैं इसे मानव नहीं बना सकता है।

सभी सब्ज़ियों और फलों का स्वाद अलग-अलग प्रकार का है। रंग और महक में विभिन्नता है जो उनकी रचना में विभिन्नता का परिणाम है यह सब प्रभू की मानव पर कृपा है।

इस तरह जन्तुओं को भी विशेष रूप से मानव के लिए पैदा किया गया है। इन का प्रयोग भोजन के लिए होता है इसके अतिरिक्त इनकी शारीरिक बनावट लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। जैसे मछली, मुँगे, स्टार फिश समुद्र की गहराइयों को अपने सुन्दर रंग से सजाती हैं। इस प्रकार चिड़ियाँ अपने घरों के शोभा द्वारा लोगों को मोह लेती है। कुत्ता, बिल्ली, ड़ालफिन, पेंगुइन इत्यदी मानव पर ईश्वर की कृपा है। ईश्वर इस सत्यता पर बहुत सारे श्लोकों में जोरदार प्रकाश ड़ालता है।

> जो चीज़ें आकाशों में हैं और जो धरती में हैं, उसने उन सबको अपनी ओर से तुम्हारे काम में लगा रखा है। निश्चय ही इस में उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सोच-विचार से काम लेते हैं। (पवित्र क़ुरआन 45:13)

> और यदी तुम अल्लाह की कृपा दानों को गिनना चाहो तो उन्हें पूर्ण रूप से गिन नहीं सकते। निस्संदेह अल्लाह बडा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है। (पवित्र क़ुरआन 16:18)

> और हर उस चीज़ में से तुम्हें दिया जो तुमने उससे माँगा। यदि तुम अल्लाह की नेमतों की गणना करना चाहो तो उनकी पूरी गणना नहीं कर सकते। वास्तव में मनुष्य बड़ा ही अन्यायी, कृतघ्न हैं। (पवित्र क़ुरआन 14:34)

जिन सजीवों का वर्णन ऊपर किया गया वह ईश्वर की कृपा और सुन्दरता का एक छोटा सा भाग है जो उसनें हम पर किया है। जिधर हम रुख करें, हमें ऐसी प्राणी और वस्तु से सामना होता है जिस से ईश्वर की कृपा झलकती है। ईश्वर अर्रज़्ज़ाक (अन्न दाता) है। वह

अल्लतीफ, अल-करीम और अल-बर है। अर्रज़्ज़ाक का अर्थ है निरन्तर देने वाला है अल्लतीफ अल-करीम, अल-बर का अर्थ सूक्ष्म, परोपकारी (उदार), और अच्छाइयों का सभी स्त्रोत है।

अब अपने चारो ओर एक दृष्टि डालिये और विचार कीजिए। इस बात से अज्ञानी मत हो जाए कि जो कुछ आपके पास है यह सब ईश्वर की कृपा है।

पवित्र कुरआन के निम्नलिखित श्लोकों में इस सत्यता को सर्व शक्तिमान ईश्वर बतलाता है।

वह बड़ा बरकतवाला है वह जिसके हाथ में सारी बादशाही है और वह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है।

जिसने पैदा किया मृत्यु और जीवन को, ताकि तुम्हारी परीक्षा करे कि तुममें कर्म की दृष्टि से कौन सबसे अच्छा है। वह प्रभुत्वशाली, बड़ा क्षमाशील है।

जिसने ऊपर तले सात आकाश बनाये। तुम रहमान की रचना में कोई असंगति और विषमता न देखोगे। फिर नज़र ड़ालो, क्या तुम्हें कोई बिगाड़ दिखाई देता है?

फिर दोबारा नज़र ड़ालो। निगाह रद्द होकर और थक हार कर तुम्हारी ओर पलट आएगी। (पवित्र कुरआन 67:1-4)

क्या उन्होंने अपने ऊपर पक्षियों को पंक्तिबद्ध पंख फैलाए और उन्हें समेटते नहीं देखा? उन्हें रहमान के सिवा कोई और नहीं थामे रहता। निश्चय ही वह हर चीज़ को देखता है।
(पवित्र कुरआन 67:19)

तो क्या वह व्यक्ति जो अपने मुँह के बल ओंधा चलता हो वह अधिक सीधे मार्ग पर है या वह जो सीधा होकर सीधे मार्ग पर चल रहा है? (पवित्र कुरआन 67:22)

कह दो, वही है जिसने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे लिए कान और आँखे और दिल बनाए। तुम कृतज्ञता थोड़े ही दिखाते हो।

(पवित्र क़ुरआन 67:23)

कह दो, वह रहमान है। उसी पर हम ईमान लाए है और उसी पर हमने भरोसा किया। तो शीघ्र ही तुम्हें मालूम हो जाएगा कि खुली गुमराही में कौन पड़ा हुआ है। कहो, क्या तुमने यह भी सोचा कि यदि तुम्हारा पानी (धरती में) नीचे उतर जाए तो फिर कौन तुम्हें लाकर देगा निर्मल प्रवाहित जल?

(पवित्र क़ुरआन 67:29,30)

तुम्हारे पास जो भी नेमत है वह अल्लाह ही की ओर से है। फिर जब तुम्हें कोई तकलीफ पहुँचती है तो तुम उसी से फरयाद करते हो। (पवित्र क़ुरआन 16:53)

८ अपने बंधुओं को निमंत्रण

मेरे प्रिय मित्रो,

मैं आपको जीवन के सत्य मार्ग का निमंत्रण देता हूँ एक बार पुनः कुरआन के श्लोकों के साथ देता हूँ।

उस व्यक्ति ने जो ईमान लाया था, कहा: ऐ मेरी कौम के लोगों, मेरा अनुसरण करो, मैं तुम्हें भलाई का ठीक रास्ता दिखाऊँगा।

ऐ मेरी कौम के लोगों, यह सांसारिक जीवन तो बस अस्थायी उपभोग है। निश्चय ही स्थायी रूप से ठहरने का घर तो आख़िरत ही है।

जिस किसी ने बुराई की तो उसे वैसा ही बदला मिलेगा, किन्तु जिस किसी ने अच्छा कर्म किया, चाहे वह पुरष हो या स्त्री, किन्तु वह मोमिन हो, ऐसे लोग (स्वर्ग) जन्नत में प्रवेश करेंगे। वहाँ उन्हें बेहिसाब दिया जाएगा।

ऐ मेरी कौम के लोगों, वह मेरे साथ क्या मामला है कि मैं तो तुम्हें मुक्ति की ओर बुलाता हूँ और तुम मुझे आग की ओर बुला रहे हो?

तुम मुझे बुला रहे हो कि मैं अल्लाह के साथ कुफ (इनकार) करूँ और उसके साथ उसे साझी ठहराऊँ जिसका मुझे कोई ज्ञान नहीं, जबकि मैं तुम्हें बुला रहा हूँ उसकी ओर जो प्रभुत्वशाली, अत्यन्त क्षमाशील है।

निस्संदेह तुम मुझे जिसकी ओर बुलाते हो उसके लिए न संसार में आमंत्रण है और न आख़िरत (परलोक) में और यह कि हमें लौटना भी अल्लाह ही की ओर है और यह कि जो मर्यादाहीन है, वही आग में पड़ने वाले हैं।

अतः शीघ्र ही तुम याद करोगे, जो कुछ मैं तुमसे कह रहा हूँ। मैं तो अपना मामला अल्लाह को सौंपता हूँ। निस्संदेह अल्लाह की दृष्टि सब बन्दों पर हैं। (पवित्र क़ुरआन 37:44)

हिन्दु ग्रंथों में भी एक ईश्वर का उपदेश हैं।

हिन्दुत्व, जैसे कि बहुत सारे हिन्दु भाई कहते हैं, यह कोई मज़हब नहीं बल्कि धर्म और सभ्यता है। वेद, उपनिषद, पुराण, ब्रह्मग्रंथ को पवित्र ग्रंथ विचार किया जाता है। सर्वाधिक पवित्र ग्रंथ वेद है। पवित्र ग्रंथों में भगवत गीता, महाभारत तथा रामायण का भी नाम आता है।

किसी भी समाज का पतन तथा गिरावट तब प्रारम्भ होता है जब वह ईश्वर के उपदेश को ठुकराता है और अपनी इच्छा की पूर्ति में पड़ जाता है। अनगिनत देवताओं की पुजा हिन्दु समाज में ईश्वर के संदेश के पतन होने का सर्वश्रेष्ठ कारण है। वेद और उपनिषद जो हिन्दु भाइयों का पवित्र ग्रंथ है इसमें मुख्य रूप से ईश्वर के एक होने को बताया गया है। ठीक यही बात अंतिम पैगम्बर मुहम्मद (ईश्वर उन पर शांति उतारे) ने भी बताया है। वह ईश्वर के संदेश को हम तक पहुँचाने वाले थे। वेदों और उपनिषदों में कहा गया कि—

सिर्फ एक ईश्वर है उसी की भक्ति करो।
(ऋगवेद 6:45:16)

उसके सिवा किसी की उपासना न करो। (ऋगवेद 8:1:1)

ईश्वर एक है, दूसरा नहीं है। (छंधोग्या उपानिषद 6:2:1)

न तस्या प्रतिमा आस्ति (उसकी कोई आकृति नहीं है।)
(यजुर्वेद 32:3)

मुहम्मद (ईश्वर उनपर शांन्ति उतारे) ने कहा, ला इलाह इलल्लाह मुहम्मदुर रसूलल्लाह । ईश्वर एक ही है और मुहम्मद ईश्वर के पैगम्बर हैं।

इस प्रकार मै अपने बंधुओं को एक सत्य ईश्वर की ओर लोटने का निमंत्रण देता हूँ। जैसा कि हमें ईश्वर के अंतिम पैगम्बर द्वारा स्मरण कराया गया।

सबसे बडा पाप मानव का यह है कि मानव कहे कि ईश्वर साझी के रूप में देवताओं को रखता है। घोषण करना कि वहाँ सभी का एक ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं, यही ईश्वर की इच्चा है। इस मामले में हम सब को ईमानदार होना चाहिए और सही रास्ते पर चलना चाहिए।

एक सत्य ईश्वर के समान समर्पण कर देने वाला धर्म का नाम इस्लाम है। यही वह मार्ग है जिसको ईश्वर ने पूरे मानव जाति के लिए चुना है। भाईचारा की प्राप्ति का केवल एक ही मार्ग है। एक हो जाने तथा कभी न खत्म होने वाला जीवन में मोक्ष प्राप्ति के लिए केवल एक ही रास्ता है। उसको छोड़ कर दूसरे की पूजा करना ईश्वर को नाराज़ कर देता है। यह कार्य ईश्वर के आज्ञा का उलंघन एवं उदंडता का प्रतीक है। इस्लाम के इस संदेश को स्वीकार करके ही, हमारे हिन्दु बन्धु ईश्वर के सत्य धर्म की ओर लौट सकते है। इस से पहले हम हिन्दु धर्म की वास्तविकता को समझ चुके हैं।

वेदों में साफ-साफ ईश्वर के एक ही होने को बताया गया है फिर भी हिन्दु आज बहुत सारे देवताओं और अवतार की पूजा करते हैं। जो वेद की शिक्षा ईश्वर के एक होने के विपरीत है। वास्तव में,

हिन्दु ईश्वर की विभिन्न रूपों में जो पूजा करते हैं यह कुछ नहीं है बल्कि वह विभिन्न गुण हैं जिसका वर्णन ईश्वर ने क़ुरआन में किया है।

मुहम्मद (स) के अवतरित होने का भी पुर्वानुमान वेद में लिखा हुआ है। आइए हम मिल कर गौर और फिक करें।

महात्मा गाँधी ने अपने अद्वितीय अन्दाज़ में कहा था। किसी ने कहा कि दक्षिणी अफ्रीका में यूरोपवासी इस्लाम के आगमन से भयभीत थे। इस्लाम जिसने स्पेन को सभ्य बनाया। इस्लाम जिसने मोरक्को को सत्य मार्ग की ओर अग्रसित किया एवं संसार को ईश्वरीय भाईचारा की शिक्षा दी। वे गैर लोगों के साथ बराबरी का दावा कर सकते हैं।

यदी भाईचारा पाप है तो वह अत्याधिक ड़र सकते हैं। यदि सभी रंगों वालो के साथ समानता पाप है तो वह ठोस आधार रखता है।

- हिन्दु धर्म के अनुयायी विश्व में अंग्रेज़ तथा इस्लाम के बाद सर्वा धिक पाये जाते है। यह बात मेरे लिए बहुत आवश्यक है क्योकि हमारा संबंध एक ऐसे देश से है जिसमें अधिकांश लोग इसी धर्म के अनुयायी हैं। हिन्दुत्व को प्राचीनतम, सभ्यता अथवा धर्म विचार किया जाता है। जिसके मानने वाले की एक बड़ी संख्याँ हिन्दुस्तान में निवास करती है। भारत में अल्पसंख्य समुदाय में सर्वप्रथम स्थान मुसलमानों का है। जो लगभग १२–१५ प्रतिशत हैं।
- इस्लाम दूसरी तरफ कभी भी अपने आप को सीमित नहीं करता है और न ही दृढ़तापूर्वक किसी विशेष धर्म या लोगों के एकाधिकार को स्वीकार करता है। प्रारंभ से ही यह ब्रह्माण्ड को संवाद देता है और सम्पूर्ण मानवता से आह्वान करता है कि सब

एक ही समुदाय के हैं। आज सम्पूर्ण संसार में १।२ अरब से अधिक मुसलमान हैं और आम विचार के विपरीत अधिकतर लोग अरबवासी नहीं हैं।

ईश्वर की ओर से मानवता की ओर इस्लाम एक खुला हुआ संदेश है।

यह केवल व्यक्तिगत आत्मीय की शिक्षा नहीं है बल्कि सच्चाई एवं इन्साफ के फैलाने का प्रायोगिक मिशन है। सर्वाधिक सत्य यह है कि एक सत्य ईश्वर के सिवा कोई ईश्वर नही है । वर्तमान जीवन एवं इसके बाद अनंत जीवन में सफल होने का यह आधरभूत सिद्धान्त है। हमारे अस्तित्व के बीच ईश्वर का यह संदेश रहेगा। पूरे मानव जाति के लिए यह एक प्रत्यक्ष निमंत्रण है।

९ कुछ दिलचस्प सवाल

मेरे प्रिय मित्रो,

मैं आपके समक्ष कुछ प्रश्नों को रखना चाहता हुँ। हर प्रश्न के नीचे बिल्कुल ठीक उत्तर है, जो पवित्र कुरआन से लिया गया है। कुरआन वही ग्रंथ है जो समस्त मानव की ओर अल्लाह का अंतिम संदेश है। कृपया इसका अध्ययन करें सोचें तथा ध्यान से परीक्षण करें।

१) परमेश्वर कौन है?

कहो, वह अल्लाह है, यकता। अल्लाह सबसे निरपेक्ष है और सब उसके मुहताज हैं। न उसकी कोई संतान है और न वह किसी की संतान। और कोई उसका समकक्ष नहीं है।

(पवित्र कुरआन 112:1-4)

यह है अल्लाह तुम्हारा रब, कोई ख़ुदा उसके सिवा नहीं है, हर चीज़ का स्रष्टा, अतः तुम उसी की बन्दगी करो और वह हर चीज़ का ज़िम्मेदार है। निगाहें उसको नहीं पा सकतीं और वह निगाहों को पा लेता है, वह अत्यन्त सूक्ष्मदर्शी और हर चीज़ से बाख़बर है। (पवित्र कुरआन 6:102,103)

२) क्या सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का सृष्टिकर्ता अल्लाह के सिवा भी कोई हो सकता है?

अल्लाह ने किसी को अपनी औलाद नहीं बनाया है, और कोई दूसरा ख़ुदा उसके साथ नहीं है। अगर ऐसा होता तो हर ख़ुदा अपनी सृष्टि को लेकर अलग हो जाता और फिर वे एक-दूसरे पर चढ़ दौड़ते। पक है अल्लाह उन बातों से जो ये लोग बनाते हैं। (पवित्र कुरआन 23:91)

३) यदी एक से अधिक परमेश्वर हैं तो किसने पृथ्वी बनायी, किसने चान्द्रमा बनाया? किसने सूर्य, जल, वायु, अग्नि, आकाश, तारे, मानव और सभी प्रकार की सजीव और निर्जीव वस्तु को पैदा किया? यदी ऐसा है तो फिर तुम्हारे वह

भगवान जिनकी तुम पूजा कर रहे हो उन्होंने कभी और कहीं यह बात कही है कि मैं परमेश्वर हूँ तुम मेरी पूजा करो और उन्होंने कहा है कि इस-इस भगवान ने इस-इस वस्तु की सृष्टि की है?

(ऐ नबी) इनसे कहो, कभी तुमने देखा भी है अपने उन साझीदारों को जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़कर पुकारा करते हो? मुझे बताओ, उन्होंने ज़मीन में क्या पैदा किया है? या आसमानों में उनकी क्या साझेदारी है? (अगर ये नहीं बता सकते तो इनसे पूछो) क्या हमने इन्हें कोई लेख्य लिखकर दिया है जिसके आधार पर ये (अपने इस बहुदेववाद के लिए) कोई साफ़ सनद रखते हों? नहीं, बल्कि ये ज़ालिम एक दूसरे को सिर्फ़ फ़रेब के झाँसे दिए जा रहे हैं। (पवित्र क़ुरआन 35:40)

४) क्या समय-समय पर ईश्वर बदलता है? क्या ईश्वर (अल्लाह) हर समाज, हर समुदाय, हर धर्म, हर संस्कृति का अलग-अलग हो सकता है? हमारा जन्म सांस लेना, देखना, अनुभव करना, खाना, अत्सर्जन और मृत्यु ये सभी प्रकियाएँ सम्पूर्ण संसार में पाये जाने वाले सभी मानव में बगैर किसी समय, जाति, विश्वास धर्म, रंग और देश के पायी जाती है।

लोगो, हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और फिर तुम्हारी क़ौमें और बिरादरियाँ बना दीं ताकि तुम एक दूसरे को पहचानो। द्यास्तव में अल्लाह की दृष्टि में तुममें सबसे ज़्यादा प्रतिष्ठित वह है जो तुममें सबसे ज़्यादा परहेज़गार है। यक़ीनन अल्लाह सब कुछ जाननेवाला और ख़बर रखनेवाला है।

(पवित्र क़ुरआन 49:13)

लोगो, बन्दगी इख़्तियार करो अपने उस रब की जो तुम्हारा और तुमसे पहले जो लोग हुए हैं उन सबका पैदा करनेवाला है, तुम्हारे बचने की आशा इसी प्रकार हो सकती है।

(पवित्र क़ुरआन 2:21)

५) अल्लाह (सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का सृष्टिकर्ता) जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड

में उपस्थित सभी प्राणियों को खिलाता है। क्या उसे खाने के लिए भोजन की आवश्यकता है?

मैं उनसे कोई रोज़ी नहीं चाहता और न यह चाहताहूँ कि वे मुझे खिलाएँ। अल्लाह तो ख़ुद ही रोज़ी देनेवाला है, बड़ी शक्तिवाला और ज़बरदस्त है। (पवित्र क़ुरआन 51:57,58)

६) क्या सर्वशक्तिमान परमेश्वर को निन्द्रा, पत्नी और बच्चे की आवश्यकता है? अगर ऐसा होगा तो कैसे ग्रह अपने अक्षों में नियमित रूप से चक्कर काटेंगे जबकि ब्रह्माण्ड का सृष्टिकर्ता सोया रहेगा?

अल्लाह, वह जीवन्त शाश्वत सत्ता, जो सम्पूर्ण जगत् को सँभाले हुए है, उसके सिवा कोई ख़ुदा नहीं है। वह न सोता है और न उसे ऊँघ लगती है। ज़मीन और आसमानों में जो कुछ है, उसी का है। कौन है जो उसके सामने उसकी अनुमति के बिना सिफ़ारिश कर सके? जो कुछ बन्दों के सामने है उसे भी वह जानता है और जो कुछ उनसे ओझल है, उसे भी वह जानता है और उसके ज्ञान में से कोई चीज़ उनके ज्ञान की पकड़ में नहीं आ सकती यह और बात है कि किसी चीज़ का ज्ञान वह ख़ुद ही उनको देना चाहे। उसका राज्य आसमानों और ज़मीन पर छाया हुआ है और उनकी देख-देख उसके लिए कोई थका देनेवाला काम नहीं है। बस वही एक महान और सर्वोपरि सत्ता है।

(पवित्र क़ुरआन 2:255)

७) तुम्हारी सृष्टि का उद्देश्य क्या है? तुम्हें क्यों बनाया गया है? जीवन के एक नियमित समय को पार कर जाने के बाद हमें मृत्यु का सामना भी करना है। इसके पीछे रहस्य क्या है?

मैंने जिन्न और इनसानों को इसके सिवा किसी काम के लिए पैदा नहीं किया है कि वे मेरी बन्दगी करें।

(पवित्र क़ुरआन 51:56)

हर जानदार को मौत का मज़ा चखना है, और हम अच्छी और बुरी परिस्थितियों में डालकर तुम सबकी आज़माइश कर रहे हैं।

आख़िरकार तुम्हें हमारी ही ओर पलटना है।

(पवित्र क़ुरआन 21:35)

जिसने मौत और ज़िन्दगी को आविष्कृत किया ताकि तुम लोगों को आज़माकर देखे कि तुममें से कौन अच्छा कर्म करनेवाला है, और वह प्रभुत्वशाली भी है और माफ़ करनेवाला भी।

(पवित्र क़ुरआन 67:2)

८) मृत्यु के पश्चात जीवन कैसा होगा? क्या आप को स्वर्ग और नर्क पर विश्वास है? यदि ब्रह्माण्ड में कई ईश्वर हैं तो निर्णय के दिन (प्रलय) तुम्हारे कर्म का फैसला कौन करेगा और किस आधार पर लोगों को स्वर्ग और नर्क में भेजा जाएगा?

इनसे पूछो, आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है वह किसका है? –कहो सब कुछ अल्लाह ही का है, उसने दयालुता की नीति अपने लिए अनिवार्य कर ली है (इसी लिए वह अवज्ञाओं और सरकशियों पर तुम्हें जल्दी से नहीं पकड़ता), क़ियामत के दिन वह तुम सबको ज़रूर इकट्ठ करेगा, यह बिलकुल एक असंदिग्ध हक़ीक़त है, मगर जिन लोगों ने अपने आपको ख़ुद तबाही के ख़तरे में डाल लिया है वे इसे नहीं मानते।

(पवित्र क़ुरआन 6:12)

बेशक, फ़ैसले का दिन एक नियत समय है। जिस दिन सूर (नरसिंघा) में फूँक मार दी जाएगी, तुम दल के दल निकल आओगे। (पवित्र क़ुरआन 78:17,18)

वह दिन सत्य है, अब जिसका जी चाहे अपने रब की ओर पलटने का मार्ग अपना ले। (पवित्र क़ुरआन 78:39)

किताबवालों और बहुदेववादियों में से जिन लोगों ने इनकार किया है वे यक़ीनन जहन्नम की आग में जाएँगे और सदैव उसमें रहेंगे, ये लोग सारी सृष्टि में अत्यन्त बुरे हैं। (पवित्र क़ुरआन 98:6)

बड़ा ही मेहरबान और दया करनेवाला है, बदला दिए जाने के दिन का मालिक है। हम तेरी ही बन्दगी करते हैं और तुझी से मदद माँगते हैं। (पवित्र क़ुरआन 1:2-4)

जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने अच्छे कर्म किए, वे यक़ीनन सृष्टि के सर्वोत्तम प्राणी हैं। उनका बदला उनके रब के यहाँ शाश्वत निवास की जन्नतें है, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, वे उनमें हमेशा-हमेशा रहेंगे। अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे अल्लाह से राज़ी हुए। यह कुछ है उस व्यक्ति के लिए जिसने अपने रब का डर रखा हो। (पवित्र क़ुरआन 98:7,8)

९) **यद्यपि विज्ञान और टेक्नोलॉजी अत्याधिक सफल हो चुकी है। क्या कोई मानव स्वयं चावल का एक छोटा दाना ही बना सकता है? नहीं, यहाँ एक प्रश्न उठता है कि एक मानव स्वयं एक चावल के दाने को पैदा करने की शक्ति नहीं रखता है तो वह कैसे ईश्वर को पैदा करेगा जिस ईश्वर ने सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को बनाया?**

कभी तुमने सोचा, यह बीज जो तुम बोते हो, इनसे ख़ेतियाँ तुम उगाते हो या उनके उगानेवाले हम हैं?

(पवित्र क़ुरआन 56:63,64)

दाने और गुठली को फाड़नेवाला अल्लाह है। वही ज़िन्दा को मुर्दा से निकालता है और वही मुर्दा को ज़िन्दा से बाहर निकालनेवाला है। ये सारे काम करनेवाला तो अल्लाह है, फिर तुम किधर बहके चले जा रहे हो? (पवित्र क़ुरआन 6:95)

१०) **क्या तुम निर्जीव वस्तु की सूची बना सकते हो? वह है**

- जिन्हें जीवन नहीं दिया गया है।
- अनुभवविहीन
- शक्तिविहीन

- अज्ञानी
- स्वयं बगैर किसी काम के उदाहरण स्वरूप पत्थर बालू के कण इत्यादि।
- क्या तुम सजीव वस्तुओं के गुणों की सूची बना सकते हो? वह हैं
- हवा, जल, अग्नि एवं भोजन इत्यादी पर निर्भर हैं।
- समय के निश्चित अन्तराल तक जीवित रहता हो।

नाश होनेवाले हैं।

ऊपर लिखित गुणों पर विचार कर लेने के बाद क्या हम निर्जीव के गुणों को सजीव के गुणों के समान कर सकते हैं? उत्तर स्वच्छ रूप से नहीं होगा, तो कैसे हम सजीव और निर्जीव वस्तुओं के गुणों को ईश्वर का गुण बतला सकते हैं?

वह अल्लाह ही है जिसके सिवा कोई पूज्य नहीं, अदृश्य और प्रकट हर चीज़ का जाननेवाला, वही सर्वोच्च करुणामय और दयावान् है। वह अल्लाह ही है जिसके सिवा कोई पूज्य नहीं। वह सम्राट है बड़ा ही पवित्र, सर्वथा सलामती, निश्चिन्तता प्रदान करनेवाला, निगहबान, सबपर प्रभुत्व रखनेवाला, अपना आदेश बलपूर्वक लागू करनेवाला, और बड़ा ही होकर रहनेवाला। पक है अल्लाह उस शिर्क (बहुदेववाद के कर्म) से जो लोग कर रहे हैं। वह अल्लाह ही है जो सृष्टि की योजना बनानेवाला और उसको लागू करनेवाला और उसके अनुसार रूप बनानेवाला है। उसके लिए उत्तम नाम हैं। हर चीज़ जो आसमानों और ज़मीन में है उसकी तसबीह (गुणगान) कर रही है, और वह प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है।

(पवित्र क़ुरआन 59:22-24)

१० कुछ विचारणीय बातें

आसमान और ज़मीन को पैदा करनेवाला एक मालिक हैं जो इन्सानों का भी पैदा करनेवाला हैं, इससे हमे अब समझ में आगया कि हमे उसी की पूजा करनी चाहिए। अगर इंसान अपने अस्ली ईश्वर को छोड़ कर सांसारिक शक्तियों और विभिन्न चिज़ों की उपासना करने लगेगा तो उन लोगों के लिए परलोक में दर्दनाक सज़ा हैं। इन तमाम चीज़ों का प्रचार इस से पहले ही हम कर चुके थे। सिर्फ पवित्र क़ुरआन ही नहीं बल्कि वेद, उपनिषद, भगवत् गीता इस तरह के विभिन्न धार्मिक किताब एक ही बात की घोषणा कर रहें हैं।

लेकिन हमें एक संदेह बार बार आता हैं कि

सारे सृष्टि का मालिक और सच्चा ईश्वर इंसान को पैदा करके, उनकी कोई मार्गदर्शन करे बगैर परलोक में अपनी उपासना नहीं करनेवालों को सज़ा देना इन्साफ हैं क्या?

नहीं, ऐसा हरगिज़ नहीं। सही समाचार दिये बगैर उनके कर्मो पर उन्हें गलत साबित करके और उसपर उनको सक्त सज़ा देना इनसाफ हरगिज़ नहीं हो सकता।

ये काम हमारे लिये ही इतना अन्याय लग रहा हैं तो क्या सारे संसार को पालनेवाला अपने बन्दों पर इतना ज़ुल्म करेगा। हरगिज़ नहीं।

सच्चाई यह हैं कि इस दुनिया के प्रारंभ से ही सर्वशक्तिमान ई श्वर इंसानों के मागदर्शन की ज़बरदस्त इंतेज़ाम किया।

इंसानों को सीधे रास्ते पर चलाने के लिये और उन्हें सच्चे ईश्वर की उपासना करने के लिए बहुत सारे इंतेज़ाम कर दिया। हर ज़माने में हर समाज में अपने तरफ से हज़ारों लाखों पैगम्बरों और देवदूतों को बेजा जो उन समाज के लोगों में उत्कृष्ट चरित्र वाले थे। वह चाहे किसी भी भाषा के हो, या किसी भी ज़माने के हो, या किसी भी जीवनकाल के हो, उनका संदेश एक ही था।

ऐ मेरे देश के लोगों, सिर्फ सृष्टिकर्ता की उपासना करो। उसके अलावा कोई पूजायोग्य नहीं।

दुनिया के प्रारंभ से ही सर्वशक्तिमान ईश्वर ने इंसान के मार्गदर्श न करने के लिए जो पैग़म्बर और देवदूत भेजे, उन्हें खाली हाथ नहीं भेजे। बल्कि इंसान के मार्गदर्शन की पूरि ज़रूरी आदेश को लिखित स्वरूप में पैगम्बरों को दिया। इंसान का मार्गदर्शन इन चीज़ो में स्पष्ट रूप से समझाया गया। अगर मुख्तसर तौर पर कहना चाहें तो, वो सच्चे भगवान की उपासना करने की शिक्षा दिये। वो लिखित स्वरूप आदेश कुछ और नहीं बल्कि हमारे आज के दैवग्रन्थ है।

अब कौन कह सकता है कि हिन्दुस्तान की हज़ारो सालों की इतिहास में एक भी पैग़म्बर नहीं आये और एक भी धार्मिक किताब नहीं उतारी? हिन्दुस्तान के प्राचीन शास्त्रों यानी वेद, उपनिषद, पुरान, भगवत गीता इत्यादि किताबो को यहा के समाज में दिव्य पुस्तकों के रूप में मानते हैं। इन किताब को सत्कार करते हैं। लेकिन धार्मिक किताब चाहे कोई भी हो, हमें दो बातों पर ध्यान देना चाहिए।

कोई भी धार्मिक किताब की उपदेश हो, वह उस ज़माने के

पैग़म्बर और समाज के लिए उतारी गयी। जब दूसरे पैग़म्बर आये तो उनसे पहले वाले उपदेशों को रद्द कर दिया। एक पैग़म्बर के बाद दूसरे का आना ही इस बात की पहचान है। उसी तरह इस दुनिया में आने वाले बहुत सारे पैग़म्बर अपने बाद आने वाले पैग़म्बर की भविष्यवाणी करते थे। आप अगले पृष्ठो के वाक्य के माध्यम से इस सत्य के बारे में सबूत के साथ परिचित हो जाएँगे।

पवित्र क़ुरआन सारे मनुष्य के लिए आयी हुई किताब है।

सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता मानव जाती की मार्गदर्शन के लिए भेजे हुए पैग़म्बरों में सब से अंतिम पैग़म्बर मुहम्मद (स) हैं। पवित्र क़ुरआन ही वो किताब हैं जो अंतिम पैग़म्बर पर उतारी गयी। इस तरह पवित्र क़ुरआन पिछले सारे पैग़म्बर और उन पर उतारी गयी धार्मिक ग्रन्थों की गवाही देती है। संक्षेप में वह किसी भी प्राचीन धार्मिक ग्रन्थ को रद्द नहीं करती है और नहीं झठलाती।

माननीय मुहम्मद (स) सारे मानव जाती के लिए ईश्वर के पैग़म्बर है

हे पैग़म्बरँ हमने आपको सारे मानव जाती के लिए भेजा।

मुहम्मद (स) सिर्फ मुसलमानों के पैग़म्बर नहीं हैं। वह अंतिम पैग़म्बर है जिन्होंने दिव्य संदेश को हम सब को पहुँचाये। वेद और पुरान भी उनके आने के बारे में भविश्यवाणी की है।

हिन्दु मत ग्रन्थों में मुहम्मद(स) का वर्णन।

मुहम्मद (स) का नाम वेदो मे नराशंसा कहा गया हैं।

नराशंसः यौ नरौ प्रशस्यते

सयण भाश्या रिगवेद समहिता 5:5:2

वो आदमी जिसकि प्रशंस की जाती है

मुहम्मद का अर्थ प्रशंसनीय है।

हे भक्तोँ धर्मशासक के बात को सुनो। यह संत, प्रशंसनीय, ६0,0९0 के बीच में पैदा हुये। वह बीस नर और मादा ऊंट के बीच में सफर करेगा। उनकी शानदार प्रसिद्धि भी स्वर्ग तक पहुँचता है। (अथर्व वेद 20:127:1-3)

व्याख्य: मुहम्मद का अर्थ प्रशंसनीय है। मुहम्मद (स) का जन्म के समय मक्के की आबादी ६0,0९0 थी। और मुहम्मद एक ही ऐसा पैग़म्बर है जिन्होंने ऊंट पर सवारी की है।

ऐतन मिन्नन्तरे म्लेच्चा आचार्येण समंवितः महामद इतिख्यातः शिष्यशाखा समन्वितः सृपश्चैव महादेवं मरुस्थल निवासिनम...

(भविश्य पुरान 3:3:3:5-8)

अर्थ: एक म्लेच्चा (निरक्षर) जो विदेशी धर्मशासक अपने शिष्य के साथ आयेग। उसका नाम मुहम्मद है। वह एक रेगिस्तान क्षेत्र का निवासी है। वह उसकी खतना किया जाएगा और उसके सिर पर कोई बुनना नहीं होगा। वह दाढी रखेगा और मांसाहारी होगा। उसकी आवाज़ बुलंद होगी। वह मुसलमान के रूप में परिचित होंगे।

वास्तव में, वेदो में मुहम्मद (स) के बारे में भविष्यवाणी की गयी हैं। उन का नाम भविष्य पुरान में आया हैं। और वह निम्न वर्ग के मूर्ति

भक्तों को प्रचार करेगा। हाँ, यही सत्य है कि वह निरक्षर के रूप में इन किताबों में वर्णन हैं। हम जानते है कि वह एक निरक्षर हैं।

पैग़म्बर मुहम्मद का वर्णन बौद्ध शास्त्रों में भी है।

नंदाँ इस दुनिया में मैं पहला और अंतिम बुद्धा नहीं हू। मेरे बाद और बुद्धा आयेंगे... एक बुद्धा जो पूरा और पवित्र जीवन मार्ग बतलायेगा। हे नंदा, वह मैत्रेया हैं।

गोस्पेल आफ बुद्धा, कारुस पृष्ठ नं 217

११ परिणाम

मेरे प्रिय मित्रो,

मुझे आशा है कि अब आप निर्णय करने कि क्षमत रकते होंगे कि क्या सत्य है और क्या असत्य है?

सच्चाई आपके समक्ष

अब यह निर्णय करना आपका काम है कि क्या आप सत्यता का अनुसरण करना चाहते हैं, ताकि आप इस संसार एवं परलोक दोनों में सफल हो जाएँ, अपने आप को विसंगत और बिना सिद्ध किये गये सैद्धान्तिक दुनिया तथ्य चारो तरफ युक्त बहुत सारी शंकाओं सें।

इस संसार तथा इसके बाद दूसरे संसार में मोक्ष प्राप्ति के लिए केवल एक ही मार्ग है कि इस वास्तिविकता का अनुसरण किया जाए तथा पवित्र क़ुरआन के प्रकाशों में एक सत्य जीवन व्यतीत की जाए। क़ुरआन प्रलय वाले दिन (प्रलय) तक मानवता के लिए दैविक मार्गदर्श न है।

मेरे प्यारे मित्र,

अंत में अपने शब्दों को सर्वशक्तिमान अल्लाह के पवित्र क़ुरआन के श्लोकों के साथ समाप्त करता हूँ।

लोगो, बन्दगी इख़्तियार करो अपने उस रब की जो तुम्हारा और तुमसे पहले जो लोग हुए हैं उन सबका पैदा करनेवाला है, तुम्हारे बचने की आशा इसी प्रकार हो सकती है।

वही तो है जिसने तुम्हारे लिए धरती का बिछौना बिछाया, आकाश की छत बनाई, ऊपर से पानी बरसाया और उइके द्वारा हर प्रकार की पैदावार निकालकर तुम्हारे लिए रोज़ी जुटाई। अतः जब तुम यह जानते हो तो दूसरों को अल्लाह का प्रतिद्वन्द्वी (समकक्ष) न ठहराओ।

और अगर तुम्हें इस बात में सन्देह है कि यह किताब जो हमने अपने बन्दे पर उतारी है, यह हमारी है या नहीं, तो इस जैसी एक ही सूरा बना लाओ, अपने मत के सारे ही लोगों को बुला लो, एक अल्लाह को छोड़कर बाक़ी जिस-जिसकी चाहो सहायता ले लो, अगर तुम सच्चे

हो तो यह काम करके दिखाओ। (पवित्र क़ुरआन 2:21-23)

दीन के मामले में कोई ज़ोर-ज़बरदस्ती नहीं है। सही बात ग़लत विचारों से अलग छाँटकर रख दी गई है। अब जिस किसी ने बढ़े हुए फ़सादी का इनकार करके अल्लाह को माना, उसने एक ऐसा मज़बूत सहारा थाम लिया जो कभी टूटनेवाला नहीं, और अल्लाह (जिसका सहारा उसने लिया है) सब कुछ सुननेवाला और जाननेवाला है।

(पवित्र क़ुरआन 2:256)

इनसे पूछो, किसकी गवाही सबसे बढ़कर है? -कहो, मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह गवाह है, और यह क़ुरआन मेरी ओर वह्य (प्रकाशना) के द्वारा भेजा गया है ताकि तुम्हें और जिस-जिसको यह पहुँचे, सबको सावधान कर दूँ। क्या वास्तव में तुम लोग यह गवाही दे सकते हो कि अल्लाह के साथ दूसरे पूज्य भी हैं? कहो, मैं तो इसकी गवाही हरगिज़ नहीं दे सकता। कहो, ईश्वर तो वही एक है और मैं उस शिर्क (बहुदेववाद) से बिलकुल बेज़ार हूँ जिसमें तुम पड़े हो।

(पवित्र क़ुरआन 6:19)

उपासना करो सृष्टिकर्ता की, सृष्टि की नहीं

ईश्वर के उपासना के संबंध में छिपी हुई सच्चाई को जान चुके हैं कि।.....

हिन्दुओं के विभिन्न धर्म-ग्रंथों के अध्ययन करने के पश्चात हम अगर हम प्रायोगिक रूप में ऊपर लिखित उन सत्यता को अपनाऐं जो विभिन्न पवित्र ग्रंथों के प्रमाणों द्वारा साबित है तो हम में से हर कोई मोक्ष प्राप्त कर लेगा।

हमेशा गुणों और सच्चाई में अच्छे कार्य करने का प्रयत्न करो।

ईश्वर हम सब के लिए एक है हम सब आपस में एक हैं।

पाठकों के लिए अपील

यदि आप इस पुस्तक के संदेश को पसंद करते है और अगर आपको लगता है कि यह दूसरों के लिए भी फायदेमंद है, तो इसे पढ़ने के बाद उसे भेंट करें। कृपया आप अपने सजावट के लिए इस पुस्तक को नहीं बचाए।

ये पुस्तक निम्न लिखित भाषाओं में उपलब्ध हैं।
इंग्लीश, तेलुगु, हिन्दी, कन्नड़ा, मलयालम, उर्दू,
ओरिया, अस्सामी, बंगाली, नेपाली

अधिक जानकारी के लिए कृपया हमसे संपर्क करें:

मोबैल : 08125419887, 09032430375
ईमेल : contact@worship-the-creator.com
दर्शन : www.worship-the-creator.com